दौलत राम महाविद्यालय

हिंदी विभाग

मानसी

हस्तलिखित पत्रिका

हिन्दी साहित्य परिषद 2025-26

सानिया बिश्नोई

हिंदी साहित्य परिषद्

सृजन

मानसी परिवार

2025-2026

संरक्षण - प्रो॰ सविता रॉय (प्राचार्य)

संपादक- डॉ. कुसुम लता, डॉ॰ संतोष सैन, डॉ. शीतल कुमारी

छात्र संपादक- तनिष्का पाण्डेय, लक्की भारद्वाज,
संपादन सहयोग - वैष्णवी पटेल

हस्तलिपि - खुशी, नेहा राठौर, प्रिया, पल्लवी,
सौम्या

मुख्य व अंतिम पृष्ठ आवरण - सानिया बिश्नोई

आंतरिक रेखांकन - इल्मा, महक, विधु, शगुन दूबे,
राजकुमारी

मानसी साहित्यिक वार्षिक हस्तलिखित पत्रिका

दौलतराम महाविद्यालय

[दिल्ली विश्वविद्यालय]

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या	विषय	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1	संपादकीय	लक्की भारद्वाज, तनिष्का पाण्डेय, वैष्णवी	1 - 2
2	स्मृति शेष		3 - 4
❀	कविताएँ		5
3	समय की सीढ़ियाँ	लताशा	6 - 7
4	तीन पहियों का संसार	वर्षा रानी	8 - 9
5	हाय उसकी टूटी कमर	आँचल कुमारी	10 - 11
6	हारना मना है	आँचल कुमारी	12 - 13
7	डिजिटल युग में हिन्दी भाषा की चुनौतियाँ और सम्भावनाएँ	वर्षा रानी	14 - 15
❀	कहानियाँ		16
8	ढलती धूप	आकांक्षा कुमारी	17 - 22
9	दीवारों के भीतर का शून्य	विजय लक्ष्मी	23 - 27
10	होड़	आकांक्षा कुमारी	28 - 31

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या	विषय	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
11	बेसहारा बुढ़ापा	वर्षा	32 - 38
12	चेहरे नहीं, दिल देखते हैं	नित्या	39 - 47
13	मुखौटा	आरती - बिष्ट	48 - 51
14	भगत सिंह के सपनों का भारत	आरती - बिष्ट	52 - 57
15	वो बचपन के दिन	मुस्कान	58
16	अंजलि की मम्मी	आँचल कुमारी	59 - 61
❀	निबंध		62
17	डिजिटल युग में हिन्दी भाषा चुनौतियाँ और सम्भावनाएं	आरती बिष्ट	63 - 67
18	आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी स्मारक भाषणमाला		68 - 77
19	हिन्दी साहित्य परिषद् वार्षिक रिपोर्ट		78 - 87

संपादकीय

"विजयिनी मानवता हो जाए, मुक्त हो जाएँ सब बंधन,
आज तुम्हारी वाणी में हो, युग-युग का सोता क्रंदन।"

साहित्य हमेशा से समाज का दर्पण रहा है। हालांकि, ऐसी दुनिया में जहां कथाएँ मुख्य रूप से पुरूष प्रधान हैं, महिलाओं का दृष्टिकोण, उनके अनुभव और उनकी रचनात्मक अभिव्यक्तियाँ अकसर हाशिये पर ही रह जाती हैं, सामाजिक मानदंडों और अपेक्षाओं के कारण दब जाती हैं। आज, जब हम परिवर्तन और प्रगति के मुहाने पर खड़े हैं, साहित्य में नारी की आवाजों की शक्ति को पहचानना महत्वपूर्ण है। लेखन केवल आत्म-अभिव्यक्ति का माध्यम है। अपने शब्दों के माध्यम से ही हम रूढ़ियों को चुनौती देते हैं, अपनी कथाओं को पुन: प्राप्त करते हैं और एक अधिक समावेशी दुनिया की कल्पना करते हैं।

विशेष रूप से महिला महाविद्यालय में रचनात्मक लेखन महज एक कौशल नहीं बल्कि एक आंदोलन है। मानसी पत्रिका के इस वर्ष के संस्करण को प्रस्तुत करते हुए, हम महिला लेखन की स्थापित परंपरा और हमारे महाविद्यालय की युवा लेखिकाओं की उभरती हुई आवाज़ों का जश्न मनाते

हैं जो इस महत्वपूर्ण साहित्यिक विरासत को आगे बढ़ा रही हैं।

साहित्य केवल कहानी सुनाना ही नहीं हैं, बल्कि विचारों और दृष्टिकोणों को आकार देना भी हैं। एक लेखिका वह स्त्री होती हैं जो रूढ़ियों से परे जाकर अस्तित्व स्थापित करने का साहस रखती हैं, वह एक कहानीकार, एक इतिहासकार और परिवर्तन की उत्प्रेरक बन जाती हैं। मानसी के इस अंक मे प्रकाशित रचनाओं के माध्यम से हम यही संदेश देना चाहते हैं- चाहे वह पारंपरिक पहलुओं को उजागर करने वाली कविता हो या विचारोत्तेजक निबंध।

संपादकीय टीम की ओर से, हम अपनी आदरणीय प्रधानाचार्या सविता राय के अटूट समर्थन और प्रोत्साहन के लिए हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं। हमारे संकाय मार्गदर्शक विभागाध्यक्ष डॉ. कुसुम लता, हिन्दी साहित्य परिषद की संयोजिका डॉ. संतोष सैन और डॉ. शीतल कुमारी को विशेष धन्यवाद, जिनके मार्गदर्शन ने इस अंक को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई हैं। अंत में, उन सभी प्रतिभाशाली छात्राओं को जिन्होनें अपने साहित्यिक रचनाँए प्रस्तुत की हैं- आपके शब्द शक्तिशाली हैं, आपकी आवाज़ मायने रखती हैं, आपकी कहानियाँ आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करेंगी।

लक्की भारद्वाज
तनिष्का, पाण्डेय, वैष्णवी

स्मृति शेष

2025-26 के दौरान कई साहित्यकारों को हमने खो दिया उनके प्रति विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

राजी सेठ

जन्म:- अक्टूबर, 1935, नौशहरा छावनी, पाकिस्तान (अविभाजित भारत)
मृत्यु:- 27 नवम्बर, 2025
प्रमुख कृतियाँ- तत-सम (उपन्यास), बाहरी लोग (कहानी), पगडंडियों पर पांव, जहां से उजास आदि।
पुरस्कार:- हिन्दी अकादमी सम्मान, भारतीय भाषा परिषद् पुरस्कार, टैगोर लिटरेचर आदि।

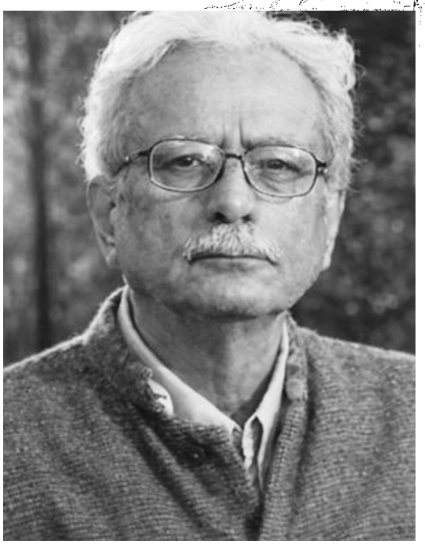

ज्ञानरंजन

जन्म- 21 नवंबर, 1936, महाराष्ट्र
मृत्यु- जनवरी, 2026
प्रमुख कृतियाँ- कबाड़खाना, फैन्स के इधर और उधर, यात्रा आदि
पुरस्कार- सोवियत लैंड नेहरू अवार्ड, साहित्य भूषण, शिखर सम्मान, मैथिलीशरण गुप्त सम्मान, भारतीय ज्ञानपीठ के ज्ञानगरिमा मानद अलंकरण।

विनोद कुमार शुक्ल

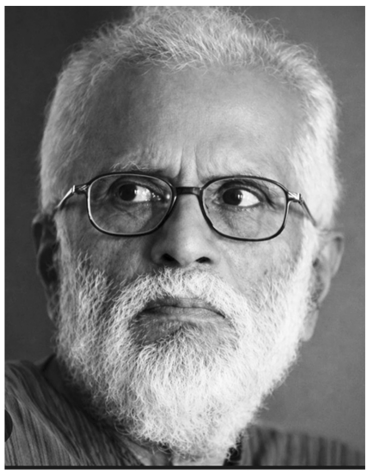

जन्म - 1 जनवरी 1937, राजनांदगांव
मृत्यु - 23 दिसम्बर, 2025
प्रमुख कृतियाँ - नौकर की कमीज (1979), दीवार में एक खिड़की रहती थी (1997), खिलेगा तो देखेंगे (1996) आदि।
पुरस्कार - ज्ञानपीठ पुरस्कार (2024), साहित्य अकादमी पुरस्कार (1999), पेन / नाबोकोव पुरस्कार (2023)।

रामदत्त द्विवेदी

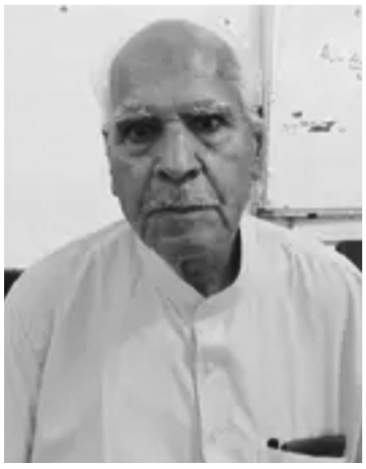

जन्म - 30 जून 1937, रामपुर जिला
मृत्यु - 18 जनवरी 2026
प्रमुख कृतियाँ - हम अंधेरों को मिटायें, खुद को बदलना होगा, मेरा भी दर्द सुनो आदि।
पुरस्कार - काव्यभूषण सम्मान, कला श्री, साहित्य गौरव सम्मान माहेश्वर तिवारी सम्मान।

कविताएँ

समय की सीढ़ियाँ

मैंने जीवन को
एक सीढ़ी की तरह देखा है
हर पायदान पर
एक नया अनुभव लिखा था।

पहले पायदान पर मासूमियत थी,
जैसे भोर की पहली किरण,
जहाँ हर प्रश्न खेल था,
और हर उत्तर, मुस्कान।

फिर समय ने आगे धकेला
संघर्ष, थकान और
भीड़ के बीच अकेलापन।
जैसे धूप में खड़ा कोई वृक्ष,
जिसकी छाया सबके लिए है,
पर खुद धूप से जलता है।

हर पायदान पर
कुछ गिरा, कुछ बचा,
कभी सपनों की मिट्टी हाथों में आई,
तो कभी उम्मीद की कली।

और अब जब ऊँचाई पर खड़ी हूँ,
पीछे मुड़कर देखती हूँ
तो सीढ़ी टूटी हुई है,
पर हर दरार में मेरी कहानी चमकती है।

जीवन ने सिखाया है
सुंदरता स्थायी नहीं,
पर सार्थकता अमर है।

यदि मेरा अस्तित्व
किसी एक मन में भी
प्रेरणा जगा सके,
तो वही मेरी सबसे बड़ी कविता
होगी।

लताशा
हिंदी विशेष
तृतीय वर्ष

तीन पहियों का संसार

सुबह निकला था कुछ पैसे कमाने,
पर पेट तो उसका खाली था।
खुश हुआ कि आज कुछ तो पैसे कमाऊंगा
मैं अपनी और घरवालों की भूख मिटाऊंगा।
पर निराश हुआ जब घंटों सवारी न मिली।

चाहे मौसम कोई भी हो,
वो मेहनत से अपना तीन पहिया चलाता है।
"दो पैसे कम लेकर भी ठीक है, चलेगा," कहकर
चला जाता है,
उस रिक्शे पर वो सवारी नहीं, अपना घर लेकर
चलता है।

गमछे से माथे के पसीने पोंछता हुआ,
पैदल दर पैदल सवारी को पहुँचाता है।
अपनी उन उम्मीद भरी आँखों से,
रोज अपने भविष्य के बारे में सोचता है।
उस चिलचिलाती धूप में थक-हार के,
खुद से कोई सवाल पूछता है।

सड़क के किनारे पर खुद से गुफ्तगू करता है,
"कही कोई आ जाए," कहकर घंटों वक्त
ज़ाया करता है।
देर रात बीतने पर अपनी रिक्शा पर ही
सो जाता है,
परिवार का ख्याल आते ही, उस अँधेरी

रात में भी सवारी ढूंढने निकल पड़ता है।

वर्षा रानी
हिंदी विशेष
प्रथम वर्ष

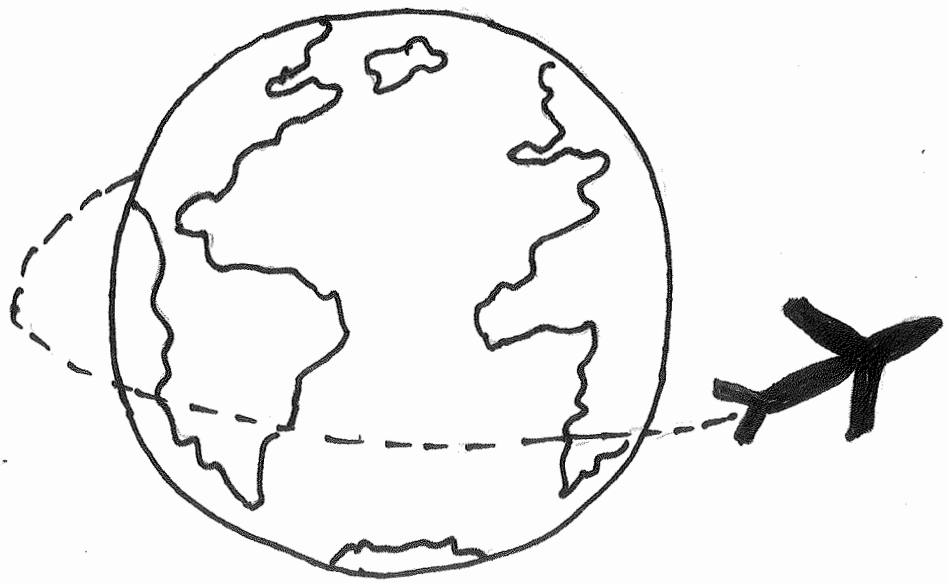

हाय उसकी टूटी कमर

उसकी कमर टूट गई कमाते कमाते

19 साल की उम्र से उसने कमाना

शुरू किया आज 45 पार कर चुका है

फिर भी न थकता है ना हार मानता है

क्योंकि उसके कंधों पर कर्ज़ का बोझ

जो लदा हुआ है, हमेशा सोचता है

अपने बच्चों को खुश रखूं अपने

हैसियत से हमेशा ज्यादा दिया है उनको

नित्य नये नये काम शुरू करता है

पर कम ही ऐसा हुआ है जिसमें

घाटा न हुआ हो, परंतु फिर भी

नित्य वह कमर तोड़ मेहनत करता है

कौन से ऐसे रोजगार उसने नहीं किए होंगे

करे भी क्यों न अपनी हैसियत से ज्यादा

जो करना चाहता है अपनो के लिए
परन्तु आज वह हार रहा है और
उसकी कमर टूट रही है और आज
वह पहली बार इतना परेशान है
आखिर कब जुट पाएगी उसकी
टुटी कमर.....

आँचल कुमारी
तृतीय वर्ष
हिन्दी विशेष

हारना मना है

तुम थको नहीं

अभी तो अच्छे दिन

आने ही वाले हैं

रखो विश्वास खुद पर

और करो शुरूआत शून्य से

क्योंकि मैं जानती हूँ

तुम कर लोगी सब

यूं इतनी जल्दी हिम्मत नहीं हारते

लड़ो अपने संघर्षों से

और सुधार कर डालो अपनी सभी गलतियों को

अंत में तुम्हारा लक्ष्य यही होना चाहिए

कि निकल जाओ आगे बढ़ जाओ अपनी

सारी की सारी परेशानियों से....

यूं हिम्मत न हारो और

रखो विश्वास खुद पर।

आँचल कुमारी
तृतीय वर्ष
हिन्दी विशेष

डिजिटल युग में हिंदी भाषा की चुनौतियाँ और संभावनाएं

आज का समय सूचना, संचार का युग है। इंटरनेट और डिजिटल माध्यमों ने दुनिया को एक ग्लोबल विलेज में बदल दिया है। इस युग में भाषा की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है क्योंकि भाषा ही संवाद और ज्ञान का आधार है। हिंदी विश्व की सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है। डिजिटल युग में लोग अनेक चुनौतियों और अवसरों का सामना कर रहे हैं, जैसे इंटरनेट, सोशल मीडिया साधनों पर अंग्रेज़ी का बोलबालाहोने से हिंदी पीछे छूटती जा रही है। हिंदी टाइपिंग के लिए एक समान कीबोर्ड या सरल व्यवस्था के न होने से उपयोग करने वाले लोगों को कठिनाई हो रही हैं। सोशल मीडिया पर हिंदी का प्रयोग हिंग्लिश के रूप में अधिक होता है; जिससे शुद्ध हिंदी धीरे-धीरे कम होती जा रही है।

डिजिटल तकनीकों ने पारंपरिक प्रकाशन उद्योग को भी नष्ट कर दिया है जिससे कई लोगों की नौकरी छूट गई हैं और बुक स्टार्स बंद हो गए हैं। इसने कई लेखकों, संपादकों और पुस्तक विक्रेताओं की रोज़गार को प्रभावित किया हैं।

कई पाठक छोटे-छोटे आकार की सामग्री को पसंद करते हैं। इससे उपन्यास और गैर-काल्पनिक पुस्तकों जैसे लंबे प्रारूप वाले साहित्य को लोकप्रियता में गिरावट आई है। वहीं दूसरी ओर देखे तो ब्लॉग, यूट्यूब, पॉडकास्ट और न्यूज़ पोर्टल्स पर हिंदी सामग्री की माँग बढ़ रही है। गाँव तक इंटरनेट पहुँचने के कारण कंपनियाँ हिंदी में विज्ञापन कर रही हैं। कंटेंट राइटिंग, ब्लॉगिंग, यूट्यूबिंग, पत्रकारिता में हिंदी का महत्व बढ़ रहा है। इन सभी बातों से पता चलता हैं कि हिंदी डिजिटल दुनिया की एक प्रभावशाली भाषा बन चुकी हैं। इसकी पहुँच न केवल भाषा प्रेमियों तक है बल्कि व्यापार, शिक्षा, संस्कृति के क्षेत्र में भी है।

वर्षा रानी
हिंदी विशेष
तृतीय वर्ष

कहानियाँ

ढलती धूप

"ज्ञानी" गुरू घंटाघर प्रसाद

यह कहानी है 'ज्ञानपुर' नाम के एक छोटे से, लेकिन आत्म-महत्व की भावना से भरे, नगर की है। यहाँ का सबसे बड़ा और अकेला बौद्धिक केंद्र था, गुरू घंटाघर प्रसाद का आश्रम। गुरू घंटाघर प्रसाद – नाम में वजन, काम में हवा – स्वयं को दुनिया के समस्त "अज्ञात सत्यों का अंतिम ठेकेदार" मानते थे। उनकी मूँछें ब्रह्मांड के गूढ़ रहस्यों की तरह उलझी हुई थीं, और उनकी आँखों में एक ऐसा भाव था, मानो वह अभी – अभी आइंस्टीन को गुरू दक्षिणा देकर लौटे हों।

ज्ञानपुर के लोग बड़े सीधे-सादे थे। वे सुबह उठते, अपने खेतों में जाते, काम करते, और शाम को बिना किसी अतिरिक्त विचार के सो जाते। उनके जीवन में कोई बड़ी "वेदना" नहीं थी, क्योंकि उन्हें ज्यादा "जानने" की ज़रूरत महसूस नहीं होती थी। उनका जीवन संतुलित था, जैसे किसी पुराने, भरोसेमंद साइकिल का पहिया – धीरे, पर लगातार चलता हुआ।

एक दिन गुरू घंटाघर प्रसाद को लगा कि ज्ञानपुर के लोग बहुत सुखी और शांत हैं, जो कि किसी भी 'ज्ञानी' के लिए अपमानजनक स्थिति थी। उनका मानना था कि असली जीवन तभी शुरू होता है, जब आप यह जान लें कि आप कितने दुखी हैं।

उन्होंने अपने मुख्य चेले, "अज्ञानंद" [जो नाम के बिल्कुल विपरीत, सब कुछ जानने को आतुर था] को बुलाया और एक "ज्ञान विस्फोट योजना" शुरू की।

"वत्स अज्ञानंद," गुरू ने एक अत्यंत गंभीर मुद्रा में कहा, "इन मूर्खों को पता ही नहीं है कि उनके जीवन में क्या कमी है! ये सुबह उठकर बस रोटी, कपड़ा, और मकान की बात करते हैं! इन्हें 'अस्तित्व के संकट' की चिंता नहीं है। इनका सुख मेरा अपमान है!"

अज्ञानंद ने हाँ में सिर हिलाया। उसने एक बड़ा सा बैनर तैयार किया, जिस पर लिखा था:

"क्या आप सच में सुखी हैं? उत्तर जानने के लिए 'ज्ञान की वेदना' सेमिनार में आएँ! फीस: एक पुरानी भैंस या $500 नकद।"

सेमिनार शुरू हुआ। गुरू ने माइक पकड़ा और आवाज को चार गुना गूंजता हुआ बनाकर बोलना शुरू किया।

"आप लोग सोचते हैं कि आप खुश हैं!" गुरू दहाड़े। "पर मैं आपको बताता हूँ आप बस एक 'अज्ञान की कोकून' में सिमटे हुए हैं! क्या आपने कभी सोचा है कि...

आपके पड़ोसी ने कल रात जो सपना देखा, उसका अर्थ क्या था?

आपकी चप्पल का रंग क्यों बदल गया ?
इस ब्रह्मांड में आपका क्या महत्व है, जब सूरज हर सेकंड ६०० मिलियन टन हाइड्रोजन जला रहा है ?
ये साधारण लोग इन बातों के बारे में नहीं सोचते थे। अब, इन प्रश्नों को सुनते ही, उनके माथे पर चिंता की पहली लकीरें उभरीं।

सेमिनार के बाद, गुरू ने एक "वेदना उत्पादन केंद्र" खोला। यहाँ, लोगों को यह जानने के लिए प्रोत्साहित किया जाता था कि उनके पास क्या नहीं है, और वे कितने "अधूरे" हैं।

'सामाजिक तुलना काउंटर': यहाँ एक बड़ा दर्पण था लोग खुद को देखते, और गुरू का सहायक उन्हें बताता: "देखो ! तुम्हारे पास अभी भी पुरानी 'साधारण कार' है, जबकि तुम्हारे दूर के रिश्तेदार के पास 'चिंतनशील एसयूवी' है ! वेदना महसूस करो !"

'दार्शनिक दुविधा विभाग': एक अन्य कमरे में, गुरू ने लोगों को पढ़ाया कि जीवन का कोई अंतर्निहित अर्थ नहीं है, और उनके सभी प्रयास व्यर्थ हैं।

"जब सब कुछ व्यर्थ है," गुरू कहते, "तो आपका जीवन एक 'भव्य निरर्थकता' है ! इस निरर्थकता को जानने की वेदना ही असली ज्ञान है।"

ज्ञानपुर में रातों-रात बदलाव आ गया।

जो किसान पहले अपनी फसलों को देखकर खुश होता था, अब वह चिंतित था कि "क्या मेरा टमाटर वास्तव में 'टमाटर होने' की पूर्णता को प्राप्त कर सका है?"

जो पत्नी पहले पति के आने पर खुश होती थी, अब वह सोचती थी, "क्या हमारा प्रेम संबंध केवल एक 'सामाजिक अनुबंध' है, या इसमें कोई 'उच्चतर आध्यात्मिक विफलता' भी शामिल है?"

हर चेहरे पर 'गहन चिंतन' की एक बोझिल परत छा गई। लोग कम बोलने लगे, ज्यादा सोचने लगे। उनका साधारण सुख, 'वेदना की जटिलता' में बदल गया। उन्होंने जान लिया था कि वे दुखी हैं, और यह जानना ही उनकी नई वेदना बन गई थी।

एक शाम, अज्ञानंद, जो अब खुद को 'पूर्ण विज्ञानानंद' कहता था, बहुत परेशान था। उसने शहर में घूमकर देखा।

एक बूढ़ा मोची, जो पहले अपनी धुन में जूते सिलता था, अब जूते सिलते हुए 'श्रम के पूंजीवादी शोषण' पर एक भारी-भरकम मोनोलॉग [स्वगत भाषण] दे रहा था।

बच्चों ने खेलना छोड़ दिया था, और वे एक समूह बनाकर 'मानव अस्तित्व की क्षणभंगुरता' पर चर्चा कर रहे थे।

शहर दुखी था, पर गुरू घंटाघर प्रसाद बहुत खुश थे। उनका बैलेंस बढ़ गया था, और उनकी ख्याति दूर-दूर तक फैल गई थी। लोग उन्हें 'महा-वेदना के जनक' कहकर बुलाते थे।

अज्ञानंद ने गुरू से पूछा: "गुरूवर, ये लोग अब दुखी हैं। क्या इन्होंने ज्ञान प्राप्त कर लिया है?"

गुरू ने अपनी मूंछें सँवारीं और आत्मविश्वास से कहा: "हाँ, वत्स! जब तक इन्हें अपनी 'जटिल और गहरी' वेदना का बोध नहीं होता, तब तक ये बस पशु हैं। अब इन्होंने जान लिया है, इसलिए इन्हें दुख है, और यही 'सभ्यता' है!"

अज्ञानंद ने कमरे में एक साधारण-सा आइना देखा। यह टूटा हुआ नहीं था, पर नया भी नहीं था। बस, अपना काम कर रहा था।

उसने गुरू से एक आखिरी सवाल पूछा: "गुरूवर, जब हम दुखी नहीं थे, तब हम खुश थे। हमने 'जान लिया' कि हम दुखी हैं, और अब हम दुखी हैं। इस पूरे 'ज्ञान' का सार क्या है? क्या ज्ञान का एकमात्र परिणाम वेदना ही है?"

गुरू घंटाघर प्रसाद ने आँखें बंद कर लीं, जैसे किसी गहरे रहस्य पर विचार कर रहे हों।

अज्ञानंद बिना जवाब पाए आश्रम से बाहर निकल गया। वह शहर के बाहर एक छोटे से गाँव में

गया, जहाँ के लोग अभी भी 'ज्ञान विस्फोट' से अछूते थे।

वहाँ, उसने एक मोची को देखा, जो अपनी पत्नी के साथ हँसते हुए काम कर रहा था। मोची एक पुराना जूता सिल रहा था और गुनगुना रहा था।

अज्ञानंद ने मोची से पूछा: "क्या तुम्हें कभी दुख नहीं होता?"

मोची ने हँसकर जवाब दिया: "होता है, कभी जूता टूट जाए तो दुख होता है। कभी ज़्यादा बारिश हो जाए तो दुख होता है। पर दुख को 'गहरा दार्शनिक' बना लेने का समय कहाँ है, साहब? दुख आया, मैंने जूता सिला, या बारिश थमी... और फिर मैं खुश! मैं इतना ही जानना चाहता हूँ कि मेरा पेट भर जाए, मेरी झोपड़ी टिकी रहे। इससे ज़्यादा जानना... तो सिर्फ वेदना को बुलाना है।"

आकांक्षा कुमारी
हिंदी विशेष [तृतीयवर्ष]

दीवारों के भीतर का शून्य

वीराने की ख़ामोशी और एक पुरानी कविता द्रवि अब एक जीवित खामोशी थी। उसके भीतर का डर किसी भूत-प्रेत का नहीं था, बल्कि उसके पति विराट का था विराट, जो बाहर की दुनिया के लिए नेक इंसान था घर में एक जीता-जागता हैवान बन जाता था।
यह डर इतना भयानक था कि द्रवि को हर पल लगता था, जैसे उसकी आत्मा शरीर से निकल रही है— केवल घोर भय की वजह से। उसकी आँखो में एक ख़ालीपन, एक शून्य था।
द्रवि को याद आया कि यह अजीब सा विचलित संसार और यह डर उसके लिए नया नहीं था। वह तो इसे पहले ही पहचान चुकी थी।
अचानक, एक रात, वह भयानक पल आया। विराट का व्यवहार अपनी चरम सीमा पर पहुँच गया था द्रवि की आत्मा फिर से शरीर छोड़ने को छटपटा रही थी। घोर भय से उसे अपनी आँखो के सामने शून्य नहीं, बल्कि अपने भविष्य की एक द्रवि दिखाई दी। उस द्रवि में, वह अंधेरे मे छिपी खौफ की आह को ढोते हुए, अगले तीस साल तक ऐसे ही जी रही थी
उस पल, द्रवि को महसूस हुआ, यह डर केवल उसी जिन्दगी पर नही, बल्कि उसकी आत्मा की पहचान पर भी कब्जा कर रहा है।
वह डर मृत्यु के डर से भी बड़ा था - वह डर था स्वयं के मिट जाने का। उसे समझ आया कि जीते-जी ख़त्म हो जाना असल मौत है। और तभी, उसे अपनी एक पुरानी कविता याद आई, जो उसने इस दर्दनाक दौर के शुरू होने से भी पहले, मानवीय स्वभाव के अँधेरे पर लिखी थी। जैसे ही कविता के शब्द

उसके मन में गूँजे, उसे लगा जैसे यह कविता किसी भविष्यवाणी की तरह उसके वर्तमान को चीर रही है:

हवि की कविता:

- कितना ही विचलित संसार है ये?
- मनुष्य भूतों से भयभीत है, एक काल्पनिक स्वप्न।
- क्या तुमने अपनी रूह को- अपनी आत्मा को अपनी काया को निकलते देखा है?
- एक जीवित प्राणी के भीतर से, केवल घोर भय के कारण?
  - यह भय प्रेतों से नहीं, उस एक जीवित- बेसुरत प्राणी से हैं।
  - हाँ- उस सचेत- मगर अमानवीय- दरिंदे से है।
  - घोर भय में आत्मा ने शरीर को छोड़ दिया है।
  - आँखो में ठहरा वो शून्य,- मन की चीख, जो अनसुनी रही।
  - बेबस निगाहों में कैद, एक वीरान सी ख़ामोशी रही।
  - वह खौफ़ जो घर की चारदीवारी भी सुरक्षित न रख सकी,
  - वह खौफ़ जिसकी परछाईं हर गली- कूचे पर अटक रही।
  - हम अदृश्य से भय क्यों खाते हैं?
- जब हमने अपने भीतर के अन्धकार को पहचानना छोड़ दिया?
- जब हमने सचेत प्राणी के "हैवान" होने की सच्चाई से मुँह मोड़ लिया?
- माना एक जीता इंसान इतना खौफ़ पैदा कर सकता है।
- उसे पता है- वह अज्ञात नहीं,
- शायद वह जानवर है,- मनुष्य नहीं।

- एक हैवान है, एक दरिंदा है।
- हाँ यह हर वो समझौता है, जो समाज ने इस भय के साथ कर लिया है।

कविता के शब्द, खासकर "घोर भय में आत्मा ने शरीर को छोड़ दिया है" छवि के भीतर तीखे तीर की तरह लगे। उसे समझ आया कि वह कविता किसी और के लिए नहीं, बल्कि उसे खुद के वर्तमान के लिए लिखी गई थी।
जो वह एक दशक पूर्व उसने अपने चाचा के किए गए एक ही पाप को बार-बार दोहराने के लिए कारणवश उस घोर अंधेरे से खुदको बाहर निकालने के लिखी थी।

वह अब बिस्तर पर पड़ी थी। बाहर की दुनिया से डरकर उसने घर की चौखट लाँघना छोड़ दिया था। रोज सुबह न उठना उसकी बेड़ी बन गई थी।
अब, वह भयानक पल आया। विराट फटने ही वाला था कि, छवि को अपनी तेज धड़कन और काँपते हाथ महसूस हुए। उसे लगा जैसे उसकी आत्मा फिर से धुआँ बनकर निकलना चाहती है।
लेकिन तभी कविता की अन्तिम पंक्तियाँ उसके मन में गूंजी "हाँ यह हर वो समझौता है, जो समाज ने इस भय के साथ कर लिया है।"
उसे समझ आया कि उसका सबसे बड़ा डर यह नहीं है कि विराट उसे मार डालेगा या उसके हामी के बगैर उसके तन का मोल करेगा। एक औरत होने के नाते वो यह तो लगभग हर रोज ही महसूस कर रही है। किसी किसी दिन

कई बार। सड़कों पर चल रहा पुरुष समाज किसी भेड़िए से कम नहीं है। अपितु उसका सबसे बड़ा डर यह है कि वह ऐसे ही डर मे जीते-जी खत्म हो जायेगी, और समाज इस हैवानियत को 'समझौता' कहकर स्वीकार कर लेगा।

यह अहसास बिजली की तरह था। उसकी मन की चीख जो अब तक अनसुनी रही थी, अब भीतर गूँजने लगी।

उसने महसूस किया कि वह अब और बेबस नहीं रह सकती। यह अंतहीन सिलसिला है जिसे तोड़ना होगा। हवि को यह भी समझ आया कि यह सचेतन दरिंदा उसे तभी डरा पाएगा, जब वह खुद अपने भीतर के अँधकार को पहचानना छोड़ देगी। उसे अब लड़ना होगा।

अगली सुबह - जब विराट घर में नहीं था, हवि ने गहरी साँस ली। उसकी आँखे अब खाली नहीं थीं। शून्य अब दृढ़ संकल्प में बदल गया था।

उसने अपने थरथराते होंठो को मजबूती से भींच लिया।

उसने नकाब उतारा, जिसे उसने और समाज ने पहन रखा था। उसने उन बेड़ियों को, उस आलस्य को, जो उसे रोके हुए थे, घर के भीतर ही छोड़ दिया।

वह चली गई। उसने चौखट को लाँघा, डर को नहीं। वह जानती थी कि बाहर की दुनिया मे भी खौफ होगा, और विराट का खौफ की आहट उसे ढूँढने की कोशिश करेगी, लेकिन अब वह भाग नही रही थी।

छवि अब टूटी हुई परछाई नही थी, बल्कि अपनी उस कविता का जीवित जवाब थी - एक ऐसी छवि जो समझौते को तोड़कर, सत्य को चुनने निकल पड़ी थी।

और फिर एक नई कहानी लिखी -

जंगल मे मांस बनूँ, आहार बनूंगी गीदड़ का।
राह पर टूट जाऊँ - कुचलकर मर जाऊं।
पश्चाताप समझूंगी दुष्कर्मो का।
खाक में मिल जाऊँ।
रौंदी जाऊं दरबदर,
दर दर की ठोकर खाऊं।

मगर आदमी की प्यास और, अंहकार नही बुझाऊँगी
उसकी मर्दानगी का सबूत नही कहलाऊंगी,
उसकी सत्ता के आगे, अपनी गरिमा न झुकूंगी।
अपनी पवित्रता, अपनी सादगी,
किसी और को देना जरूरी नही समझती।
औरत हू जिंदा रहूँ या मर जाऊं,
अपनी मर्ज़ी से ही मैं अपनी कथा लिखूंगी।
मैं जो भी हूँ जैसी भी हूँ, जीवन मेरा है, जीना मेरी शर्त है।

विजयलक्ष्मी
चतुर्थ वर्ष
हिन्दी विशेष

दौड़

(16)

क्षीतिज पर नववर्ष की स्वार्णिम आभा फैल चुकी थी खेतों की मोड़ो पर ओस की बूँदे मोती-सी दमक रही थी। बैलो की घंटियों की ध्वनि वातावरण को अल्हड़ बना रही थी। हल थामे खड़ा था धरणीधर। कंधे पर गमछा और माथे पर पसीने की बूँदे। पर मन में एक ही शंका- हमें भी नीलांश को शहर भेजना चाहिए..... यह भूमि हमारे लिए केवल अन्नदाता बनी रहेगी सम्मान का साधन नहीं। पास ही उसकी पत्नी कल्याणी खड़ी थी। पल्ला सिर पर टिकाते हुए बोली — "सुनते हो, पड़ोसी गिरिराज ने अपने बेटे को लखनऊ भेज दिया है। अंग्रेजी पाठशाला में पढ़ेगा। यदि हमारे नीलांश को यहीं रोके रखा तो उसे अपने हिस्से का आसमान कब मिलेगा..... धरणीधर की दृष्टि आकाश की ओर उठ गई। "कल्याणी खेत गिरवी रखने पड़े तो रख देंगे। हम तो मिट्टी रगड़ते रह गए, पर नीलांश को नई राह दिखानी ही होगी" पास ही खड़ा नीलांश इन संवादो को सुन रहा था। उसके हृदय में उल्लास भी था और भय भी। गाँव की चौहदी से बाहर की दुनिया उसके लिए अज्ञात स्वप्न लोक जैसी थी।

शहर का जीवन बिल्कुल भिन्न था। यहाँ समय ऐसे दौड़ा था जैसे नदी की धारा में नाव। एक

ओर था विजयरत्न, नौकरीपेशा। दूसरी ओर समान, समृद्ध व्यापारी। उनके पुत्र- ऋत्विक और आरिफ़- सहपाठी भी थे और मित्र भी। परन्तु घरों के भीतर एक अदृश्य स्पर्धा धधक रही थी।

विजयरत्न प्रातः काल समाचार-पत्र उलटते हुए पत्नी सावित्री को बोले - "देखो अब 95 प्रतिशत से ऊपर पाने वाले ही श्रेष्ठ महाविद्यालयों में प्रवेश पा रहे हैं। सावित्री ने कहा - हाँ और सुना है आरिफ़ को ट्यूशन में नाम लिखवा लिया है। यदि ऋत्विक पीछे रह गया तो....... "नसीमा भैंने आरिफ़ को ट्यूशन लगा दिया है। दीवारें साझा थीं, परन्तु भीतर- भीतर तुलना की आग सबको झुलसा रही थी।

कुछ महीनों बाद धरणीधर ने खेत गिरवी रख दिए और नीलांश को नगर भेज दिया। उसकी आँखों में भविष्य का स्वर्ण स्वप्न झिलमिला रहा था। नीलांश ने उसी विद्यालय में दाखिला लिया जहाँ ऋत्विक और आरिफ़ पढ़ते थे। प्रारंभिक दिनों में सब कुछ कठिन प्रतीत हुआ। अंग्रेजी के शब्द उसे पर्वत से लगे। दिखावेपन से दूर" धीरे- धीरे वह ऋत्विक और आरिफ से घुलमिल गया। संध्या को वे तीनों पार्क में बैठकर घंटों बातचीत करते।

नीलांश बोला "गाँव में सब कहते थे - बेटा शहर

जाएगा तो कलेक्टर बनेगा। पर यहाँ तो सब श्वासहीन दौड़ में लगें हैं। एक अंक कम आते ही जीवन शून्य-सा लगने लगता है।"

अचलिक ने कहा – "मेरे पिता ने कर्ज लेकर पढ़ाया, तुम्हारे पिता ने खेत गिरवी रखे, और आरीफ़ के पिता ने मंहगे शिक्षक बुलाया। सब अपनी-अपनी दौड़ में हैं।

आरीफ़ ने गहरी साँस भरी – पर प्रश्न यह है – क्या हम प्रसन्न हैं? क्षण भर के लिए मौन छा गया। परिणाम की घड़ी – आरीफ़ 93%, अचलिक-92%, नीलांश 84%। आरीफ़ के घर उल्लास का माहौल था..... सावित्री रो पड़ी – "सिर्फ एक अंक से पिछड़ गया ..... लोग क्या बोलेंगे। नीलांश के घर धीरजधर ने माथा पकड़ लिया – "इतना ऋण लिया, भूमि गिरवी रखी, और तू केवल 84 प्रतिशत पर ठहर गया!

हमारी मेहनत व्यर्थ हो गई ..... कल्याणी की आँखों से आंसुओं की धारा बह चली।

नीलांश रातभर जगता रहा। उसे लगा जैसे वह अपने परिवार के लिए बोझ बन गया है।

एक शाम तीनों पार्क में मिले।
अचलिक बोला .... निरंतर तुलना, कटु वचन और

अंको की होड़ मुझे लगता है, मैं अपने परिवार के लिए कभी पर्याप्त नहीं हो पाऊँगा। नीलांश ने कहा – मेरे पिता इतने संघर्ष करके मुझे पढ़ा रहे हैं, यदि मैं असफल हुआ तो उनकी उम्मीद....

आरीफ़ ने ..... दोनो को देखा और बोला मेरे घर मे मिठाई बँटी, किंतु मुझे भय है- यदि अगली बार पीछे रह गया तो.....

तीनो की आँखे नम थीं। उन्हे प्रतीत हुआ इस होड़ में वास्तविक पराजित तो हम ही हैं, चाहें प्रतिशत कुछ भी हो।

किनारा चाहे कितना भी कच्चा क्यों न हो आशा की ज्योति फिर भी जलती है पर यदि यह होड़ बुझी नहीं, तो न आशा बचेगी न किनारा।

आकांक्षा कुमारी
तृतीय वर्ष
हिन्दी विशेष

बेसहारा बुढ़ापा

आज की इस भागती दुनिया में सब भाग रहे हैं कोई रुकना नहीं चाहता। कोई भाग रहा है अपने सपनों के पीछे, कोई अपने - पराये के पीछे, तो कोई पैसों के पीछे, तो कोई मोह माया के पीछे, या कोई अपने काम पर, या कोई अपने कॉलेज तो कोई स्कूल के लिए

इसी दौड़ - भाग की जिंदगी में मैं भी एक दिन आगे जा रही थी मैं भी सड़क से जल्दी कॉलेज के लिए जा रही थी, फोन चलाते हुए - जो आज कल हमारी आम गतिविधि है।
यूँ ही रास्ते से बस स्टैण्ड जा रही थी, तभी पीछे से एक आवाज आई कोई वृद्ध व्यक्ति बहुत कराहने जैसे स्वर में पीड़ा की आवाज़ में चिल्ला रहा था

उसकी आवाज में पीड़ा का जो स्वर मेरे कानो तक पहुँचा, उसकी वेदना से, मेरे आगे जाने के बाद भी मैंने पीछे मुड़ कर देखा और उनकी ओर देखा तो मैंने पाया कि यह एक वृद्ध व्यक्ति है, कुछ 75 या 80 वर्ष की आयु का बहुत ही बूढ़ा शरीर हो चुका है स्टैंड के सहारे खड़ा है और यह एक के मुह से लगभग सभी दाँत गायब हो चुके हैं कुछ औपचारिक

निभाते हुए 3-4 दाँत ही बाकी हैं।

उनकी दशा देखकर कोई भी यह अनुमान लगा सकता था कि इनको मदद की आवश्यकता है

मैंने उनसे पूछा,
"क्या परेशानी है, बाबा?"

उन्होंने उत्तर दिया,
"कोई रिक्शा ही नहीं जाता है मैं कब से आवाज़ लगा रहा हूँ, लेकिन कोई रुक नहीं रहा"

मैंने उनसे पूछा,
"आपको कहाँ जाना है?"

उनका उत्तर आया,
"दवा लेने क्लीनिक जा रहा हूँ, लेकिन कोई रिक्शावाला ही रुकने को राज़ी नहीं"

मैंने बोला,
"आप शांत हो जाइए"

इतने में ही मैंने आते हुए रिक्शे को रोका जो इतने रिक्शे वाले बाबा की इतनी चिल्लाने पर नहीं रुके, वह मेरे एक आवाज़ से रुक गए

मैंने उनको बिठाया

तभी इसी सफर की बातचीत मे मुझे मालूम हुआ कि उन्हें फ़ालिस की समस्या है, जिसकी दवा लेने वह इधर आए थे, मगर यहाँ की क्लीनिक पर दवा खत्म हो गई थी, इसलिए वह दूर वाले क्लीनिक पर दवा लेने जा रहे थे

मैंने उनसे एक स्वाभाविक सा प्रश्न पूछा, जो शायद मेरे लिए स्वाभाविक था लेकिन उनके दर्द को कुरेदने जैसा था
मैंने उनसे पूछा,

" बाबा, आपको यह समस्या है तो आप पैदल अकेले क्यों जा रहे हैं? अपने बेटों या किसी को साथ क्यों नहीं लाते?"

उन्होंने कहा,

" इस दुनिया में अब इस बूढ़े शरीर का कोई नहीं है अब हम किसी के काम के नहीं तो कोई हमारा भी नहीं बुढ़िया ने सब कुछ बेटों के नाम कर दिया, खुद तो ऊपर चली गई पता नहीं ऊपर वाला कब बुलाएगा मुझे बेटे हैं कि पूछते ही नहीं हैं, बहू तो चाय तक नहीं पूछती। बीमारी के हाल मे इस स्टैंड के सहारे चलना पड़ता चला नहीं जाता, बेटा दर्द होता है, मगर सुनने वाला कौन है? अब तो बस वही ऊपर वाला सुन ले और बुला ले अपने पास"

पड़ा हुआ हूँ, अब तो भगवान जब उठा ले तभी

उनकी यह पीड़ा सुनकर मेरे हृदय में पीड़ा हुई और मेरे पास शब्द नहीं थे मैं निःशब्द हो चुकी थी
उनकी इस दर्द से मुझे मालूम पड़ चुका था कि यह कलयुग का वही दृश्य है, जिसकी वजह से हमारे समाज में वृद्धाश्रम की स्थापना हुई

जब मैंने उनसे पूछा कि आपको कहाँ दवा लेने जाना है,
उन्होंने कहा, ----
"बेगमपुर क्लीनिक"
वह बार-बार यही बात कहते थे कि अब तो भगवान बस बुला ले

उनकी कहानी और दशा इतनी दयनीय थी कि मेरी आँखो से आँसू अपने आप झलक आए
उन आँसूओं में मेरी दादी की भी याद आई और उनके प्रति करुणा भी

मैंने उन्हे क्लीनिक पहुँचाया और सोचा, इनको मैं कुछ दे दूँ
जो कुछ रुपए या खाद्य पदार्थ मेरे पास था, मैंने उन्हें दे दिया
उनकी आँखो की वह चमक और ये शब्द—
"भगवान तेरा भला करे"
दोनो ही आत्मा को परम शांति से भरने वाली थी

पर यह शब्द कितने अजीब हैं, ना— अपने अंतिम समय

मैं भी इतना कुछ भोगते हुए मनुष्य ईश्वर में आस्था नहीं छोड़ना चाहता
जिस मनुष्य ने पूरे जीवन अच्छे कर्म किए, अपने बेटों के लिए इतना कार्य किया, अंत समय में जिन बेटों ने उनकी सेवा तक नहीं की, पूरे जीवन कष्ट सहते हुए भी वह मनुष्य आस्था रखता है कि,
"भगवान जो करते हैं, वह अच्छा करते हैं"

ऐसा सोचकर हर परिस्थिति पार कर जाता है इंसान और जीना सीख जाता है

वह दृश्य कई दिनों तक मेरे हृदय और मस्तिष्क में बैठा रहा, और आज तक उनके लिए करुणा कम नहीं हुई मगर मैंने यह बात किसी से नहीं कही, और इस कहानी को आज लिख रही हूँ

कुछ समय पश्चात, एक दिन अकस्मात वह मुझे फिर मिल गए
बात करके पता चला कि वह भूखे हैं इस बार वह दवा लेने नहीं आए थे, इस बार वह भूखे थे

मैंने उन्हें कुछ फल दिए उनकी आँखे चमक उठीं उन्होंने कहा,
"चाहे जैसी भी परिस्थिति हो, यदि जीना लिखा है तो ईश्वर किसी न किसी रूप में मदद करेगा।"
शायद इसका तात्पर्य था कि मेरा भोजन देने से

उनका निर्वाह हो गया

उन्होंने कहा,

"एक दिन मेरा भी न्याय होगा भगवान के देर है, अंधेर नहीं किसी दिन तो बेटे को भी सद्बुद्धि आएगी"

मुझे उनके घर का पता चल गया क्योंकि वह हमारे आसपास ही रहते थे
मैंने उस दिन सोचा कि कैसी आस्था है जहाँ लगातार उनके साथ गलत हो रहा है, वहाँ भी उनका विश्वास अडिग है

उनका घर पास ही था मैं उन्हें वहाँ छोड़ आई क्योंकि चलने में दिक्कत हो रही थी
उनके स्टैंड की भी हालत उतनी ही खराब थी जितनी उनकी, शायद तो नहीं बस उनकी लड़खड़ाती पीठ और पैर के साथ यह भी लड़खड़ा रहा था

एक दिन उसी गली से जाते हुए, मैंने देखा कि बहुत भीड़ है पास गई तो सफेद चादर में एक वृद्ध व्यक्ति पड़ा था देखने पर मैंने पहचान लिया — वही बाबा थे

इतनी हिम्मत नहीं हुई कि किसी से पूछ सकूँ कि यह घटना कैसे हुई
आसपास के लोग आपस में ही कह रहे थे,
"बहू-बेटे ख्याल नहीं रखते थे शुक्र, अच्छा हुआ भगवान ने उठा लिया नहीं तो नर्क जैसा हाल बना रखा था।

यहाँ तक कि लोग कह रहे थे कि ठंड में बुढ़ढे को बाहर छोड़ रखा है और बहू-बेटे मूवी देखने चले गए बेचारा, उस समय का दृश्य ऐसा था कि कलयुग का प्रतिबिंब दिख रहा था

मैंने सोचा - भगवान के न्याय में इतनी देर क्यों है फिर भी लोग अपनी आस्था पर स्थिर रहते हैं और कहते है,

"भगवान उनकी आत्मा को शांति दे।"

शायद यह अंत उनके लिए दुखद नही था, बल्कि उनके जीवन से सुखद ही था। उनके दर्द की गूंज आज भी वह दृश्य याद करके मेरे अन्तर्मन में गूंजती है।

नाम : वर्षा
तृतीय वर्ष
हिंदी विशेष

चेहरे नहीं, दिल देखते हैं

शानाया को देखकर हर कोई कहता – "क्या लड़की है! जैसे किसी फिल्म से उतरकर आई हो।" उसकी बड़ी-बड़ी आँखें, नर्म बाल, और मुस्कुराता चेहरा हर किसी को अपनी ओर खींच लेता था। लेकिन कोई नहीं जानता था कि इस चमक के पीछे कितना अंधेरा था।

उसका बचपन प्यार और सुरक्षा से कोसों दूर था। माँ-पापा की लड़ाइयों, ताने और अकेलेपन ने उसकी आत्मा को धीरे-धीरे खा लिया था। बाहर से चमकती, लेकिन अंदर से एकदम खाली।

दूसरी ओर थी रीता – जिसके चेहरे पर बचपन का वो जख्म था, जो समय के साथ भी नहीं भर पाया। बारह साल की उम्र में एक रिश्तेदार ने उस पर तेज़ाब फेंक दिया था – एकतरफा प्यार की सज़ा में। तब से वह समाज के लिए दया का पात्र बन गई थी।

लोग कहते – "बेचारी लड़की...."

कोई कहता – "इतनी छोटी उम्र में इतना दर्द, भगवान किसी को ना दे..."

पर रीता को दया नहीं चाहिए थी, बराबरी चाहिए थी।

अध्याय २: पहली मुलाकात

रीता का एडमिशन हुआ नौवीं कक्षा में – साल के बीच में। जब वह क्लास में पहली बार आई, तो एक अजीब सी खामोशी छा गई। कुछ बच्चे फुसर-फुसर करने लगे, कुछ ने नजरें चुराईं।

लेकिन शानाया ने उसकी तरफ मुस्कराकर देखा। वह पहली थी जिसने रीता को "चेहरा" नहीं, "इंसान" समझा।

लंच ब्रेक में शानाया उसके पास आई –

"अगर चाहो तो मैं तुम्हें नोट्स दे सकती हूँ, तुम्हारा काफी कुछ मिस हो गया है अभी तक।"

रीता थोड़ी हैरान हुई। धीमे से बोली –

"तुम... मुझसे बात कर रही हो?"

"हां, क्यों नहीं?" शानाया मुस्कुरा दी, "तुम भी हमारी क्लास की हाला हो। और --- दोस्त बनने के लिए चेहरा थोड़ी देखा जाता है?"

वहीं से शुरुआत हुई एक गहरी दोस्ती की।

अध्याय : 3

धीरे-धीरे दोनों एक-दूसरे के सबसे क़रीबी बन गईं। स्कूल की लाइब्रेरी, कैंटीन और कॉरिडोर — सब उनकी हँसी और बातों के गवाह बन गए।

एक शाम, स्कूल के मैदान में बैठी दोनो लड़कियाँ अपने-अपने अतीत को साझा कर रही थीं।

रीता बोली :

"तुझे पता है, लोग मुझसे नज़रें चुराते हैं। ऐसा लगता है जैसे मैं एक ज़िन्दा इंसान नहीं, कोई डरावना चेहरा हूँ।"

* "लेकिन तू --- तू मुझे वैसे देखती है जैसे मैं सच में हूँ। पहली बार किसी ने मुझे 'बेचारी' नहीं कहा।"

शानाया की आँखों में भी नमी आ गई। उसने कहा —

"मुझे भी सब खूबसूरत कहते हैं, लेकिन कोई नहीं जानता कि अंदर मैं कितनी टूटी हुई हूँ। बचपन की हर रात डरावना सपना थी। रीता, हम दोनों की तकलीफें अलग हैं, लेकिन दर्द एक जैसा है। शायद इसीलिए हम एक-दूसरे को समझ पाते हैं।"

अध्याय 4: असली सुंदरता

कुछ हफ्तों बाद स्कूल में 'फेस ऑफ द स्कूल' प्रतियोगिता होने वाली थी। सभी को उम्मीद थी कि शानाया ही जीतेगी।

लेकिन शानाया के मन में कुछ और था।

प्रतियोगिता के मंच पर जब उसका नाम आया, वह मंच पर गई, माइक उठाया और कहा:

"सब कहते हैं मैं सुन्दर हूँ। लेकिन मुझे असली सुंदरता रीता में दिखती है। उसका चेहरा नहीं, उसका साहस, उसका आत्मसम्मान, और उसकी हिम्मत उसे खास बनाते हैं।"

"अगर ये मुकाबला चेहरों का है—तो मैं हारना चाहती हूँ। लेकिन अगर ये दिलों का है—तो मेरी सबसे खूबसूरत दोस्त रीता ही विजेता होनी चाहिए।"

पूरा ऑडिटोरियम तालियों से गूंज उठा। गीता की आंखों से आंसू बह रहे थे। लेकिन इस बार आंसू दर्द के नहीं – अपनत्व के थे।

अध्याय 5: नई शुरुआत

उस दिन के बाद सबने गीता को अलग नज़रों से देखना शुरू किया। अब कोई उसकी ओर दया से नहीं, सम्मान से देखता था।

शानाया और गीता की दोस्ती एक मिसाल बन गई। दो टूटी आत्माओं ने मिलकर एक-दूसरे को जोड़ दिया। बहुत बढ़िया! आपने जिस खूबसूरती और संवेदनशीलता से शानाया और गीता की दुनिया रची है, वो दिल को छूती है। ये सिर्फ एक कहानी नहीं, बल्कि समाज के लिए एक आइना है – जो दिखाता है कि इंसान की असली पहचान उसके जख्मों और दिल से होती है न की उसके चेहरे से।

अध्याय: 6

स्कूल की प्रतियोगिता के बाद, गीता को पहली बार महसूस हुआ कि वह अकेली नहीं है। लोग अब उसकी कहानी को जानना चाहते थे, उसे सुनना चाहते थे।

एक दिन स्कूल की एक टीचर ने उसे बुलाकर कहा:

"रीता, क्या तुम स्कूल की अगली असेंबली में अपनी सबके सामने बताना चाहोगी? कई बच्चे हैं जिन्हें तुम्हारी हिम्मत से सीखने की जरूरत है।"

रीता का दिल तेज धड़कने लगा। कभी सोचा भी नहीं था कि लोग सुनना चाहेंगे। उसने शायाना की ओर देखा। शायाना ने मुस्कुराकर सिर हिलाया।

रीता ने कहा—

"हां, मैं सुनाऊंगी और शायद पहली बार, मैं खुद को आवाज़ दूंगी।"

अध्याय ५: जब रीता बोलती है

अगले हफ्ते की असेंबली।

स्टेज पर रीता खड़ी थी — कांपते हाथ, कांपती आवाज़, लेकिन नज़रें बिलकुल साफ।

"मैं रीता हूं। और आज मैं आपको बताने आई हूं कि ज़िंदगी में जख्म मिलते हैं, लेकिन उन जख्मों को आप कैसे जीते हैं — ये आपकी असली पहचान बनता है"

"जिसने मुझ पर तेज़ाब फेंका था, वह मेरी हिम्मत को जलाना चाहता था --- लेकिन उसने मुझे और मजबूत बना दिया।"

"और शानाया... मेरी सबसे प्यारी दोस्त – उसने मुझे सिखाया कि जब कोई तुम्हें इंसान समझे, तो तुम्हें खुद से शर्म नहीं आती, बल्कि गर्व होता है।"

हॉल में सन्नाटा था और फिर – एक लंबी, गूंजती हुई तालियों की बारिश।

उस दिन रीता सिर्फ एक कहानी नहीं, एक प्रेरणा बन गई।

अध्याय 8: बदलाव की शुरुआत

उस असेंबली के बाद, शानाया और रीता ने एक छोटा सा प्रोजेक्ट शुरू किया –

"हम सब सुंदर हैं" – एक कैंपेन, जहाँ वो उन बच्चों की कहानियाँ सामने लाती थीं, जो किसी ना किसी रूप में समाज के तानों का शिकार हुए थे।

स्कूल में वर्कशॉप्स शुरू हुईं – बॉडी पॉजिटिविटी, मेंटल हेल्थ, सेल्फ-लव पर।

धीरे-धीरे दूसरे स्कूलों ने भी इस पहल को अपनाया।

अब वे सिर्फ दोस्त नहीं थीं –
वे परिवर्तन की साथी बन चुकी थीं।

अध्याय: 9 जब जख्म ताकत बनते हैं

12वीं की परीक्षा के बाद, शानाया और रीता ने मिलकर

एक NGO शुरू किया—

"चेहरे नहीं, दिल देखते हैं"।

यह संस्था उन एसिड अटैक सर्वाइवर्स, मानसिक स्वास्थ्य से जूझते किशोरों, और आत्म-सम्मान खो चुके युवाओं के लिए एक आश्रय बन गई।

रीता वर्कशॉप्स लेती, अपनी कहानी सुनाती।

शानाया मेंटल हेल्थ पर काम करती, और थेरेपिस्ट्स के साथ मिलकर दूसरों को मदद पहुंचाती।

उनके NGO में एक बोर्ड टंगा था—

"हमारा चेहरा हमारा परिचय नहीं, हमारा जज़्बा है।"

अंतिम अध्याय: असली आईना

एक दिन एक लड़की उनके पास आई—
चेहरे पर नकाब, आँखों में डर।

रीता ने उससे कहा:

"यहाँ तुम जैसे हो, वैसे ही सबसे खूबसूरत हो।"

लड़की फूट-फूटकर रोने लगी। उसने कहा—

"आप दोनों को देखकर मुझे यकीन हुआ की मैं भी जी सकती हूं, खुलकर ... बिना डर के।"

शानाया ने मुस्कुराकर कहा—

"जब तुम खुद को स्वीकार लोगी, तब दुनिया भी तुम्हें अपनाने लगेगी।"

और फिर वह लड़की पहली बार खुद को शीशे में देख मुस्कुराई।

□ उपसंहार □

"हम टूटे हैं — लेकिन बिखरे नहीं।"
"हम जले हैं — लेकिन बुझाए नहीं गए।"
"हमने दर्द देखा — लेकिन उसे उम्मीद में बदला।"

रीता और शानाया ने साबित किया कि दोस्ती सिर्फ साथ चलने का नाम नहीं —
बल्कि एक-दूसरे की परछाई बनने का नाम है, जब दुनिया रोशनी छीन ले।

नाम — नित्या
वर्ष — बी.ए. प्रथम वर्ष

सुर्खाँटा

गाँव- शहर, कस्बे मोहल्ले सबके चेहरे पर आज कल एक अनोखा शृंगार चढ़ा है। इस शृंगार का नाम है - देशभक्ति। पर यही वो देशभक्ति है जो दीपावली के झालरों की तरह केवल अवसर पर जगमगाती है और अवसर बीतते ही अंधकार में गुम हो जाती है।

सड़क किनारे एक नन्हा बच्चा कागज के तिरंगे झंडे बेच रहा था। उसकी मासूम आवाज हवा में गूंजती- "ले लो झंड़ा... पाँच रूपये का तिरंगा" उसकी आँखों में मासूमियत थी; उसे शायद यह भी न पता था कि झंड़ा केवल कागज का टुकड़ा नहीं, बल्कि सम्मान का प्रतीक है।

पास ही चाय की दुकान पर बैठा एक वृद्ध व्यक्ति मुस्कुराकर बोला -
"झंड़ा तो अपने आप में पवित्र है बेटा, उसे लगाने से गर्व भी होता है... मगर असली देशभक्ति तभी है जब झंड़े की मर्यादा को अपने जीवन में भी निभाया जाए।"

स्वतंत्रता दिवस हो या गणतंत्र दिवस गली-गली में झंड़े बिकते हैं, दुकानों पर राष्ट्रीय गीत बजते हैं और व्हाट्सएप पर "जय हिंद" के संदेशों की बाढ़ आ जाती है। फेसबुक की दीवारें तिरंगे के रंगों से सज जाती हैं, इंस्टाग्राम की कहानियाँ 'देश के वीर जवानों की सलामी' से भर जाती हैं। शाम होते-होते वही कागजी तिरंगे सड़कों

की धूल और कीचड़ में बिखरे पड़े मिलते हैं, मानो मौन होकर पूछ रहे हों – क्या तुम्हारी देशभक्ति केवल कुछ घंटों की मेहमान थी? साथ ही वही व्हाट्सएप वाली भक्ति उनके डिलीट फाइल में खो जाती है।

लोग कहते हैं – "हम देश के लिए कुछ भी कर सकते हैं।" पर यह 'कुछ भी' हमेशा लाइक, कमेंट और शेयर तक सीमित रहता है। असलियत यह है कि देशप्रेम एक प्रदर्शनी बन गया है और हम सब उसके कलाकार।

एक दिन शहर की सड़क पर एक दुर्घटना हुई। एक युवक रक्त से लथपथ पड़ा था। लोग भीड़ बनाकर खड़े हो गए। किसी ने उसकी नब्ज नहीं टटोली, किसी ने पानी तक नहीं दिया। हाँ, पर हर किसी के हाथ में मोबाइल जरूर था। कोई वीडियो बना रहा था, कोई लाइव दिखा रहा था, कोई तस्वीर लेकर लिख रहा था – "बहुत दुखद, इंसानियत मर गई है। भगवान उसकी आत्मा को शांति दे।"

विडंबना देखिए – जिस युवक की सांसे अब भी चल रही थी, उसे लोग पहले ही मृत घोषित कर चुके थे। किसी ने अस्पताल तक ले जाने की जहमत नहीं उठाई क्योंकि उनके लिए 'पोस्ट' करना ही संवेदना का चरम था। हमारे समाज में अब करुणा भी डिजीटल हो गई है। आँसू इमोजी बन चुके हैं और संवेदना स्टेटस में ढल गई है। असल जिंदगी में लोग निःस्पृह

है, पर आभासी दुनिया में वे करुणा के महा-गुरु।

हमने देशभक्ति को एक दिन का उत्सव बना दिया है। देशप्रेम भी अब सस्ता सौदा है। नेता मंच पर चढ़कर ऊँचे-ऊँचे नारे लगाते हैं और मंच से उतरते ही रिश्वत की लेनदेन में व्यस्त हो जाते हैं। आम नागरिक झंडा लहराता है, राष्ट्रगान गाता है पर ट्रैफिक सिग्नल पर खड़ा भिखारी उसे दिखाई नहीं देता और वही नागरिक नियमों को तोड़ते हैं कचरा फैलाते हैं और भ्रष्टाचार को सामान्य लेते हैं। नेताओं की बात छोड़िए यहाँ तक की आम आदमी भी अपनी जिम्मेदारियों से मुँह मोड़ लेता है।

वास्तविक देशप्रेम न नारों में है, न मंचों पर और न ही भाषणों में, बल्कि उस रोजमर्रा की ईमानदारी में है जहाँ हम बिना दिखावे के अपने कर्तव्य को निभाते हैं। देशभक्ति का असली चेहरा वही है, जो बिना मुखौटे के अपने कर्तव्य को निभाएं।

यही हाल अब भक्ति का भी हो गया है, भक्ति अब मंदिरों की घंटियों में नहीं, बल्कि मोबाइल स्क्रीन की चमक में गूंजती है। घरों में रखी मूर्तियां अब श्रद्धा का केन्द्र कम और रीलों का विषय अधिक बन गई है। असली भक्ति जो मन को निर्मल करती थी, अब भीड़ की वाहवाही लूटने का साधन बन गई है

सवाल यह है कि क्या हम इस मुखौटे को उतार पाएंगें? या फिर यूं ही नारे, शैली और पोस्ट के बीच अपने विवेक और संवेदनाओं को गंवाते रहेंगे?

आरती बिष्ट
तृतीय वर्ष
हिंदी विशेष

कहानी : "भगत सिंह के सपनों का भारत"

शहर की धूलभरी गलियों में भागते बच्चे, सड़कों पर ठेले खींचते मज़दूर और फुटपाथ पर किताबें बेचता किशोर – ये सब देखकर अयान का मन अक्सर विचलित हो उठता था। अयान दिल्ली विश्वविद्यालय का विद्यार्थी था और इतिहास का गहन पाठक भी। उसके मन में अक्सर यह प्रश्न कौंधता – "क्या यही है वह भारत, जिसके लिए लाखों क्रांतिकारियों ने अपने प्राणों की आहुति दी? क्या यही है वह धरती, जिसके भविष्य के लिए भगत सिंह जैसे नौजवान फाँसी के फंदे पर झूल गए थे?"

उस रात अयान पुस्तकालय से लौटकर देर तक भगत सिंह की डायरी पढ़ता रहा। उनकी पंक्तियाँ उसकी आँखों में गूंजती रहीं –
"क्रांति की तलवार विचारों की शान पर तेज होती है।"
धीरे-धीरे थकान ने उसे घेर लिया और वह किताबों पर सिर रखकर सो गया।
नींद और जागृति के बीच उसे लगा मानो कोई तेज रोशनी कमरे में भर गई हो।

उसने आँखे मलकर देखा – सामने खड़े थे भगत सिंह । वही ज्वलंत आँखें , वही सादगी, वही अडिग आत्मविश्वास ।

अयान अवाक रह गया । उसने काँपती आवाज़ में कहा —
“ शहीद – ए – आज़म ! क्या यह सच है ? आप मेरे सामने... ? ”

भगत सिंह मुस्कुराए –
“ सपनों में ही सही , पर मैं अक्सर उन नौजवानों के पास चला आता हूँ जिनके दिल में भारत को बदलने की बेचैनी बाकी है । बताओ अयान , तुम क्यों इतना व्याकुल हो ? ”

अयान के भीतर जैसे ज्वालामुखी फूट पड़ा ।
“ आपके सपनों का भारत कहाँ है भगत सिंह ? चारों ओर भ्रष्टाचार है , बेरोज़गारी है , धर्म और जाति के नाम पर नफ़रत है । किसान आत्महत्या कर रहे हैं , युवा दिशाहीन हो रहे हैं । क्या यही वह भारत है , जिसके लिए आपने बलिदान दिया था ? ”

भगत सिंह ने गहरी साँस ली ।
“ अयान , मैं जिस भारत का सपना देखता था, वह केवल अंग्रेज़ों से आज़ाद देश नहीं था । वह था विचारों से आज़ाद भारत – जहाँ कोई इंसान जाति , धर्म या गरीबी की बेड़ियों में जकड़ा न हो । मैं चाहता था कि किसान की मेहनत का फल उसे पूरा मिले , मज़दूर को सम्मानजनक जीवन मिले और शिक्षा हर

बच्चे का अधिकार बने। सबसे बड़ा सपना था — जवाबदेह नागरिकता। परंतु... सपनों को साकार करना केवल क्रांतिकारियों का कार्य नहीं, बल्कि हर पीढ़ी का दायित्व होता है।"

अयान चुपचाप सुनता रहा। अचानक खिड़की के बाहर से बच्चों की किलकारियाँ सुनाई दीं। वह देखता है — कुछ बच्चे खुले मैदान में फुटबॉल खेल रहे थे; उनके पास जूते नहीं थे, लेकिन आँखों में चमक थी।

भगत सिंह ने इशारा किया —
"देखो अयान, ये बच्चे हैं भारत का भविष्य। इनके चेहरों पर जो मुस्कान है, उसे सुरक्षित रखना ही मेरे सपनों का असली अर्थ है। पर यह तभी संभव होगा, जब युवा अपनी ऊर्जा केवल निजी लाभ या पद की दौड़ में नहीं, बल्कि समाज सुधार में लगाएंगे।"

अयान ने झिझकते हुए कहा —
"पर आज का युवा तो सोशल मीडिया और दिखावे की दुनिया में खो गया है। आंदोलन, त्याग, सेवा — ये शब्द किताबों तक सीमित रह गए हैं।"

भगत सिंह की आँखों में ज्वाला चमक उठी।
"तो उन्हें जगाना ही पड़ेगा। जब मैं बीस वर्ष का था, तब मेरे चारों ओर भी लोग भय और निराशा में डूबे थे। लेकिन क्रांति कभी भीड़ से नहीं, कुछ जागरूक व्यक्तियों से शुरू होती है। एक विचार, एक आंदोलन,

एक सच्चा प्रयास – यही धीरे-धीरे पूरे समाज को बदल देता है। आज अगर तुम जैसे विद्यार्थी आगे बढ़कर शिक्षा, समानता और न्याय के लिए खड़े हों, तो कोई ताक़त भारत को बदलने से नहीं रोक सकती।"

अयान का हृदय काँप उठा।
"लेकिन शहीद-ए-आज़म, मैं अकेला क्या कर पाऊँगा?"

भगत सिंह ने दृढ़ स्वर में कहा –
"याद रखो अयान, अकेले से ही शुरुआत होती है। जब मैंने अंग्रेजी साम्राज्य के विरुद्ध आवाज़ उठाई थी, तब मेरे साथ कितने लोग थे? पर विचारों की शक्ति ने धीरे-धीरे पूरा राष्ट्र जगा दिया। तुम शिक्षा से जुड़े रहो, गाँव-गाँव जाकर बच्चों को पढ़ाओ, भ्रष्टाचार के खिलाफ़ आवाज़ उठाओ, नफ़रत की दीवार तोड़ो। यही है मेरे सपनों के भारत की नींव।"

इतना कहकर भगत सिंह ने धीरे-धीरे अपना हाथ अयान के कंधे पर रखा।

"मेरे भारत के नौजवानों को यह समझना होगा कि आज़ादी केवल झंडा लहराने या राष्ट्रगान गाने से पूरी नहीं होती। असली आज़ादी तब होगी जब किसी की भूख, किसी का दर्द और किसी की बेबसी देखकर भी हम चैन से न बैठें।"

अचानक कमरे में फैली रोशनी क्षीण होने लगी। भगत सिंह का स्वर दूर से आता प्रतीत हुआ — "अयान, सपनों का भारत किताबों में नहीं, कर्म में जन्म लेता है। अब यह जिम्मेदारी तुम्हारी है..."

और फिर सब कुछ शून्य हो गया।

अयान की आँख खुली तो सुबह हो चुकी थी। सूरज की किरणें खिड़की से भीतर आ रही थीं। मेज़ पर वही खुली डायरी रखी थी। उसने पन्ना पलटा — एक पंक्ति चमक उठी — "मैं भविष्य में भी उसी विश्वास के साथ जीवित रहना चाहता हूँ कि मेरा देश जाग उठेगा।"

उस क्षण अयान ने निश्चय किया — वह अपने जीवन को केवल अपने करियर तक सीमित नहीं रखेगा। वह उन बच्चों के लिए पुस्तकालय खोलेगा जिनके पास किताबें नहीं हैं। वह युवाओं को प्रेरित करेगा कि वे धर्म और जाति से ऊपर उठकर देश की प्रगति में योगदान दें।

दिन बीते, महीनों ने करवट ली। धीरे-धीरे अयान का छोटा-सा प्रयास एक आंदोलन में बदलने लगा। विश्वविद्यालय के कई छात्र उससे जुड़े। वे झुग्गियों में जाकर बच्चों को पढ़ाने लगे, सड़क पर प्रदर्शन कर भ्रष्टाचार के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाने लगे। उनका नारा था —

"यह देश हमारा है, हम ही इसका भविष्य हैं।"

समाज में बदलाव धीरे-धीरे झलकने लगा। लोगों ने महसूस किया कि असली सम्मान केवल व्यक्तिगत सफलता में नहीं, बल्कि सामूहिक प्रगति में है।

और जब कभी अयान थकता या निराश होता, उसे अपने सपने में देखी हुई वही आँखें याद आतीं — भगत सिंह की आँखें — जो कह रही थीं,

"भारत अभी अधूरा है, पर तुम्हारे प्रयासों से यह वही भारत बनेगा, जिसका मैंने सपना देखा था।"

आरती बिष्ट
तृतीय वर्ष,
— हिंदी विशेष

वो बचपन के दिन

मुझे आज भी वो बचपन के दिन याद हैं, जब मैं चिंता शब्द से बेखबर थी। वो बचपन के दिन जब मैं स्कूल जाती थी और स्कूल में कभी-कभी देर से पहुँचने पर हम बच्चों से बगीचे में पत्ते उठवाए जाते थे। तो कभी स्कूल के दो चक्कर लगाने की सजा मिलती थी... वो जब सुबह की प्रार्थना होती थी तो चुपके से आँखें खोलकर सब-को देखना और टीचर के देखने पर आँखें बंद कर लेना आज भी याद है... स्कूल में सबसे ज्यादा खुशी खेल के पीरियड में होती थी जब हमें स्कूल के छोटे से मैदान में खेलने के लिये ले जाया जाता था और उस खेल के पीरियड में हम खो-खो, दौड़ लगाना आदि खेल खेलते थे। वो आज भी याद है।

मेरे बचपन के समय में आज की तरह स्मार्ट फोन नहीं थे और न ही आज के समय की तरह सोशल मीडिया था। उस समय तो बस सभी दोस्तों के साथ कई तरह के खेल खेलते थे। परंतु आज के समय में ये खेल काफी हद तक समाप्त हो चुके हैं। आज जब मैं बचपन के दिनों के बारे में सोचती हूँ तो ऐसा लगता है कि सब कुछ बहुत सुंदर था। वो बचपन कि मस्ती, छोटी-छोटी खुशियाँ सब कुछ बहुत सुनहरा था।

वो बचपन के दिन....

मुस्कान
~~द्वितीय~~ वर्ष
~~हिन्दी~~ विशेष

अंजलि की मम्मी

अंजलि की मम्मी, इसी नाम से जानती हूँ, मैं उस औरत को, अंजलि के जन्म से पहले शायद उसे (फूलबाग) गाँव के नाम. फूलबागवाली नाम से बुलाया जाता था उसका नाम था. यह मुझे आज तक नही पता परन्तु वह खुश है कि उसे अंजलि की मम्मी या रामचंदर की बहुरिया के नाम से भी जाना जाता है। वह अपनी हस्ती-खेलती गृहस्थी में बेहद खुश है, उसे अच्छा लगता है, सुबह उठकर बच्चो के लिए नास्ता बनाना, पति को खाना बाँधकर देना स्वं काम पर जाते समय खूब निहारकर देखना यह भी पूछ लेती है रोजाना शाम को क्या खाना बनाऊँ जो बच्चे स्वं पति को पसंद होता था। वही रोजाना बनता था, शायद बच्चो की ही पसंद. में अंजलि की मम्मी की पसंद निहित थी।

दिनचर्या यूं ही चलती गयी. महीने गुजरे. बीच-बीच मे पति से नोंक-झोंक के साथ-साथ उसका मर्द कभी हाथ भी उठा देता था। खैर, वह कुछ न बोलती थी, उसकी सास की कहा करती थी, कमाने वाला चार बात कहता ही है। दिन-भर धूप मे काम करता है, तभी तो तुम्हारा ये कुएँ जैसा पेट भर जाता है। खैर इसी तरह कई साल गुजरे बच्चे बड़े हो रहे थे गाँव में काम करने से खर्च नही चल पा रहा था, पढ़ाई-लिखाई का खर्चा बढ़ता जा रहा था। सब-कुछ सोच-विचार के निर्णय यह निकला कि राम चंदर अब शहर कमाने जायेगा, जिससे गृहस्थी अच्छे से चल सके और बच्चों की पढ़ाई में भी रुकावट न आए। आखिर

तीनों बच्चे ऊँची- ऊँची क्लास में थे. अंजलि की मम्मी का मन तो नही था अपने पति को प्रवासी मजदूर बनने देने का। पर उसके मन का आज तक वुद्ध हुआ है जो अब होगा ? शहर न जाने देने का कारण यह भी था कि शहर जाकर पुरुष परायी स्त्री को उसका प्यार दे। रामचंदर को शहर गए पाँच साल हो गए लेकिन इन पाँच सालो मे अपनी पत्नी से एक बार भी फोन पर बात नहीं की। घर आता तो केवल बच्चों से बात करता. अपनी माँ को पैसे देता और फिर शहर निकल जाता उसका दिल अब शहर मे ज्यादा लगता हैं। अंजलि की मम्मी ने हँसना छोड़ दिया है। वह किसी से भी बात नही करती थी, न खुद से खाना खाती थी। कोई खाना उसके आगे रखकर चला जाए तो खा लेती थी, इसी प्रकार उसकी जिन्दगी कट रही थी।

दिल्ली शहर मे पति किसी परायी स्त्री के साथ खुश है. बच्चो से भी समय- समय पर बातें कर लेता है। बच्चे जो भी मांगते हैं। उन्हे देता है। शहर से जब भी गाँव आता है अपने बच्चों के लिए खूब चीले लाता है। अंजलि ने अपने पापा से कहा "पापा तुम सबसे अच्छे पापा हो दुनिया मे। मम्मी तो वुद्ध भी नही करती है, ही मम्मी गंदी मम्मी है।" उस पर अंजलि की दादी ने कहा — "बात मत कर उस कलमुही से... नहीं तो यह हँसता- खेलता चेहरा उदास हो जायेगा। बेटा कितना अच्छा बेटा है, भगवान सबको ऐसा बेटा दे।" रामचंदर सबसे अच्छा बेटा, सबसे अच्छा पिता बन गया क्योंकि वह सबकी जरुरतों को जो पूरा करता है। लेकिन, अंजलि की मम्मी जिसको ये भी नही पता कि उसकी

पसन्द क्या है ? प्यार क्या होता है ? जिसने सबको इतने सालों तक संभाला सभी का ख्याल रखा। पति के अलावा पराये पुरुष को देखा भी नहीं। केवल अंजलि की मम्मी के नाम से जानी जाती थी। उसपर एक और लांक्षण 'कलमुही' और न जाने क्या-क्या ---- फिर भी वह चुप है बस शांत नीरस और गंदी मम्मी।

आँचल कुमारी
तृतीयी वर्ष
हिन्दी विशेष

निबंध

डिजिटल युग में हिन्दी भाषा चुनौतिया और संभावनाएं

आज का युग सूचना, प्रौद्योगिकी और इंटरनेट का युग है। ऐसा युग जहाँ संसार के कोने-कोने को जोड़ने वाला सबसे सशक्त माध्यम "डिजिटल मंच" बन चुका है। इस नए युग में भाषाएँ केवल संवाद का साधन नहीं रही, बल्कि पहचान, प्रभाव और प्रतिस्पर्धा का प्रतिक बन गई हैं। ऐसे में यह प्रश्न स्वाभाविक है कि हिन्दी भाषा, जो विश्व की सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है, डिजिटल परिवर्तन के इस प्रवाह मे कहाँ खड़ी है?

डिजिटल युग में हिन्दी के समक्ष अनेक प्रकार की चुनौतियाँ है -

अंग्रेज के प्रभुत्व - आज अधिकांश डिजिटल मंच, साफ्टवेयर, तथा तकनीकी शब्दावली अंग्रेजी मे ही निर्मित हैं। परिणामस्वरुप हिन्दी उपयोगकर्ता को या तो अंग्रेजी का सहारा लेना पड़ता है या फिर अपने विचारों को सीमित शब्दो में बांधना पड़ता है।

तकनीकी शब्दो का अभाव - हिन्दी में कई आधुनिक तकनीकी शब्दो के लिए समानार्थक शब्द उपलब्ध नहीं है या उनका प्रयोग बहुत कम होता है इससे युवा वर्ग अंग्रेजी पर निर्भर हो जाता है।

युवा पीढ़ी में भाषा-बोध की कमी → विद्यालय और उच्च शिक्षा में अंग्रेजी के अत्यधिक प्रयोग ने युवाओं मे हिंदी लेखन और बोलचाल की शुद्धता को प्रभावित किया है।

व्यावसायिक क्षेत्र मे उपेक्षा → निजी कंपनियों, बैंकिंग, आईटी सैक्टर आदि मे हिन्दी का प्रयोग बहुत सीमित है। इससे हिंदी बोलने वाले लोगों को अवसरों की कमी महसूस होती है।

शुद्धता और अभिव्यक्ति की रक्षा - सोशल मीडिया और चैटिंग प्लेटफॉर्म पर हिन्दी का स्वरूप "हिंग्लिश" बनता जा रहा है - जहाँ देवनागरी की जगह रोमन लिपि ने ले ली है। यह प्रवृत्ति हिन्दी की मौलिकता को धीरे-धीरे कमजोर कर रही है।

डिजिटल सामग्री की कमी - अंग्रेजी मे जहाँ हर विषय पर विस्तृत साहित्य, पुस्तकें, वेबसाइटें और शोध-सामग्री उपलब्ध है, वहीं हिन्दी मे यह संसाधन अभी सीमित हैं।

तकनीकी शब्दों की कठिनाई - विज्ञान, प्रौद्योगिकी, चिकित्सा, अभियांत्रिकी तथा प्रबंधन जैसे आधुनिक और विशेषज्ञता-प्रधान क्षेत्रों में हिन्दी के लिए उपयुक्त तथा सर्वमान्य तकनीकी शब्दों की उपलब्धता सीमित है। परिणामस्वरूप, जब किसी जटिल वैज्ञानिक या तकनीकी अवधारणा को हिन्दी मे व्यक्त करने का प्रयास किया जाता है, तो सटीकता और स्पष्टता दोनों में कमी आ जाती है। उदाहरण के लिए, "कम्प्यूटर" शब्द का हिंदी रूप "संगणक" प्रचलन में तो है, किन्तु व्यवहार

में बहुत कम प्रयोग होता है। यही कारण है कि विज्ञान तथा तकनीकी क्षेत्र में अंग्रेजी शब्दावली का प्रभुत्व बना हुआ है, और हिन्दी का प्रयोग सीमित रहा जाता है।

अनुवाद की समस्या → स्वचालित अनुवाद प्रायः शुद्धता और साहित्यिक गरिमा को बनाए रखने में असफल रहते है। फलस्वरूप - मूलपाठ की आत्मा - भावभूमि और सृजनात्मकता अनुवाद मे नष्ट हो जाती है। उदाहरण के लिए किसी कविता या साहित्यिक गद्य का यांत्रिक अनुवाद शब्दार्थ तो पहुँचा देता है, परन्तु उसके भावार्थ लय, और संवेदना का सौन्दर्य खो जाता है। किन्तु जहाँ चुनौतियाँ है, वही संभावनाएँ भी अनंत है:-

डिजिटल युग की भागीदारी - डिजिटल युग ने हिन्दी को वैश्विक मंच प्रदान किया है। अब कोई भी हिन्दी लेखक, कवि या विचारक अपने शब्दो को इंटरनेट के माध्यम से लाखों पाठकों तक पहुँचासकता है। यूट्यूब, ब्लॉग, पॉडकास्ट, और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ने हिन्दी सृजन को नई उड़ान दी है।

तकनीकी विकास - सरकारी और निजी स्तर पर भी हिन्दी को तकनीक से जोड़ने के प्रयास जारी है। गूगल ट्रांसलेट, वॉयस टाइपिंग, और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित हिन्दी सॉफ्टवेयर ने हिन्दी लेखन को सरल और सुगम बना दिया है।

सरकारी प्रयास - भारत सरकार "डिजिटल इंडिया" हिन्दी पखवाड़ा व 'राजभाषा नीति' तथा विभिन्न

संस्थाएं ई- गवर्नेंस, शिक्षा और न्याय के क्षेत्र में हिन्दी को प्रोत्साहित कर रही है।

वैश्विक मंच पर पहचान - विदेशियों में बसे भारतीय समुदाय हिन्दी को डिजिटल माध्यम से जीवित रखे हुए है। यह भाषा अब सीमाओं से परे पहुंच चुकी है।

डिजिटल शिक्षा में हिन्दी का विस्तार— स्कूलों, कॉलेजों और ऑनलाइन पाठ्यक्रमों में हिन्दी माध्यम के संसाधन बढ़ रहे है।

सांस्कृतिक पहचान और लोकभाषाओं को बढ़ावा- हिन्दी कंटेंट के ज़रिए भारत की विविधता और संस्कृति दुनिया तक पहुँच रही हैं।

इसके अतिरिक्त, युवा पीढ़ी में हिन्दी साहित्य, कविता, और कहानी लेखन के प्रति नया आकर्षण देखा जा रहा है। डिजिटल मंचों ने हिन्दी को भाषा नहीं, एक सांस्कृतिक पहचान के रूप में पुनर्जीवित किया है।

डिजिटल युग हिन्दी के लिए चुनौती भी है और अवसर भी। यदि हम तकनीक के साथ अपनी भाषा की आत्मा जोड़े रखे, तो हिन्दी न केवल जीवित रहेगी, बल्कि विश्व पटल पर अपनी नई छवि बढ़ेगी। बल्कि हमे आवश्यकता है कि हम हिन्दी को संवेदना की भाषा से आगे बढ़कर सृजन और तकनीक की भाषा बनाएं।

तभी हिन्दी डिजिटल युग मे अपने पूर्ण वैभव के साथ खिल सकेगी।

आरती बिष्ट
तृतीय वर्ष
हिन्दी विशेष

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी

44 वीं शृंखला

2025-26

13 नवम्बर 2025 को आयोजित आचार्य हजारी प्रसाद स्मारक भाषणमाला की 44 वीं कड़ी भारतीय ज्ञान परम्परा के गहन एवं बहु आयामी स्वरूप को उजागर करने वाला एक महत्त्वपूर्ण बौद्धिक आयोजन सिद्ध हुआ। "भारतीय ज्ञान परम्परा : साहित्य, शोध और संभावनाएं" विषय के अंतर्गत यह कार्यक्रम न केवल हमारी सांस्कृतिक - साहित्यिक विरासत के पुनर्पाठ का अवसर बना, बल्कि समकालीन संदर्भों में उसके नवोन्मेषी आयामों पर विचार - विमर्श का सार्थक मंच भी प्रदान करता है। यह आयोजन भारतीय चिंतन की अखंड परंपरा को समझने, उसके साहित्यिक आधारों को पहचानने तथा शोध की नई दिशाओं को उद्घाटित करने की एक सशक्त पहल के रूप में स्थापित हुआ।

भाषणमाला के अध्यक्ष के रूप में दिल्ली विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के वरिष्ठ प्रोफेसर प्रो. पूरनचंद टंडन की गरिमामयी उपस्थिति रही। विशिष्ट अतिथि के रूप में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की पौत्री सुश्री अपर्णा द्विवेदी ने कार्यक्रम की गरिमा को विशेष रूप से समृद्ध किया। वहीं मुख्य वक्ता के रूप में अदिति महाविद्यालय की प्रख्यात प्रोफेसर डॉ. आशा ने अपने विचारों

से विषय को गहराई और विस्तार प्रदान किया। इन सभी विद्वतजनों की उपस्थिति ने भाषणमाला को एक उत्कृष्ट बौद्धिक आयाम प्रदान किया।

सभी अतिथियों, महाविद्यालय की प्राचार्या प्रो. सविता रॉय, हिंदी विभाग के प्राध्यापक-प्राध्यापिकाओं तथा सेवानिवृत प्राध्यापिकाओं की गरिमामयी उपस्थिति में दीप प्रज्ज्वलन एवं सरस्वती वंदना के साथ भाषणमाला का शुभारंभ अत्यंत मंगलमय वातावरण में संपन्न हुआ। इस अवसर पर अतिथियों का पारंपरिक औपचारिकता से आगे बढ़ते हुए हर्बल पौधों के माध्यम से अभिनव, पर्यावरण - संवेदी स्वागत एवं हार्दिक अभि-नंदन किया गया, जिसने आयोजन को विशिष्ट गरिमा और संवेदनशीलता से आलोकित कर दिया।

दौलतराम महाविद्यालय के हिंदी विभाग के लिए यह बहुत ही गर्व का विषय रहा कि आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी की पौत्री अपर्णा द्विवेदी जी ने मुख्य अतिथि के रूप में कार्यक्रम की शोभा को बढ़ाया। साथ ही आचार्य हजारीप्रसाद जी के पोते और उनकी धर्मपत्नी के रूप में डॉ. नगेन्द्र की पौत्री भी कार्यक्रम में उपस्थित रहीं। हिंदी के महान साहित्यकार आचार्य हजारी प्रसाद

द्विवेदी की पौत्री एवं पौते तथा प्रख्यात आलोचक डॉ. नगेन्द्र की पौत्री की गरिमामयी उपस्थिति ने भाषणमाला की 44 वीं शृंखला के इस कार्यक्रम की शोभा में अनेक गुना वृद्धि कर दी। हिंदी के महान साहित्यकारों के परिजनों का सान्निध्य केवल हिंदी विभाग और महाविद्यालय के लिए गौरव का विषय ही नहीं, बल्कि साहित्यिक परंपरा और सांस्कृतिक विरासत से जुड़ने का एक प्रेरणास्रोत भी है। उन सभी की उपस्थिति के माध्यम से हमारी छात्राएं और हिंदी विभाग के समस्त प्राध्यापकों को उन महान विभूतियों की स्मृतियों और उनके अमूल्य योगदान को और अधिक निकटता से अनुभव कर पाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

हिंदी विभाग की ओर से डॉ. संतोष सैन और डॉ. शीतल कुमारी ने सभी अतिथियों का आत्मीय स्वागत एवं अभिनंदन करते हुए अपने उद्बोधन में दौलतराम महाविद्यालय के हिंदी विभाग द्वारा आयोजित "आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी स्मारक भाषणमाला" की समृद्ध परंपरा पर प्रकाश डाला। उन्होंने उल्लेख किया कि इस प्रतिष्ठित भाषणमाला की स्थापना आचार्य द्विवेदी जी की सुपुत्री, स्वर्गीय श्रीमती इंदुमती ओझा द्वारा की गई थी, जो स्वयं दौलतराम महाविद्यालय

के हिंदी विभाग में प्राध्यापिका के रूप में कार्यरत रहीं। डॉ. संतोष सैन ने इस परंपरा को ज्ञान-संवर्धन और वैचारिक संवाद की एक सशक्त कड़ी बताते हुए इसे विभाग की गौरवपूर्ण बौद्धिक विरासत के रूप में रेखांकित किया। साथ ही डॉ. संतोष सैन मैम ने आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी जी के व्यक्तित्व की उदात्तता, उनके विचारों, साहित्यक ज्ञान एवं लेखन शैली से सभी का परिचय करते हुए आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी के विविध साहित्यक ग्रन्थों के उदाहरण देकर हिन्दी साहित्य में उनके महत्व एवं योगदान पर प्रकाश डाला।

सर्वप्रथम मुख्य वक्ता के रूप में प्रो. आशा जी ने अपने वक्तव्य का आरम्भ भारतीय ज्ञान परम्परा एवं भारतीय संस्कृति पर बेहद ही सहज एवं प्रभावशाली सन्दर्भों के साथ अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि वैदिक साहित्य से लेकर आधुनिक काल तक ज्ञान का संचयन साहित्य के माध्यम से भारतीय मानस को समृद्ध करता रहा है। इसी परम्परा के प्रतिनिधि के रूप में आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी का व्यक्तित्व अत्यंत महत्वपूर्ण है। वे उच्चकोटि के निबंधकार, उपन्यासकार, आलोचक और शोधकर्ता थे, जिन्होंने शान्ति निकेतन,

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय और पंजाब विश्वविद्यालय सहित विभिन्न संस्थानों में अपने अध्ययन और सृजन से साहित्यिक जगत समृद्ध किया। उनका उपन्यास 'बाणभट्ट की आत्मकथा' हर्षकालीन संस्कृति और जीवन का सजीव चित्र प्रस्तुत करता है।

व्याख्यान में यह भी बताया गया कि भारतीय ज्ञान परम्परा को वैश्विक मान्यता तब मिली जब यूनेस्को ने भरतमुनि कृत 'नाट्यशास्त्र' को मेमोरी ऑफ द वर्ल्ड रजिस्टर में शामिल किया। इस ग्रंथ में नाटक, अभिनय, संगीत, नृत्य और मंच सज्जा के सिद्धांतों का विस्तृत वर्णन है तथा 'रस सिद्धांत' आज भी प्रासंगिक है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी भारतीय ज्ञान परम्परा और रंगमंचीय अध्ययन को बढ़ावा देने पर बल देती है। अतः यह विषय शोध एवं शैक्षणिक दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

विशिष्ट अतिथि के रूप में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी की पौत्री अपर्णा द्विवेदी जी ने अपने ओजस्वी वक्तव्य में सर्वप्रथम कहा कि इतने बड़े और सार्थक बौद्धिक आयोजन का हिस्सा बनना उनके लिए सौभाग्य का विषय है, जिसके लिए वे

संस्थान एवं आयोजकों के प्रति कृतज्ञ हैं। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि प्रस्तुत शोध-विषय उनका अत्यंत प्रिय विषय रहा है और इसमें निहित शोध संभावनाएँ व्यापक एवं बहुआयामी हैं।

अपर्णा जी ने बताया कि कबीर पर सर्वप्रथम शोध आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने किया तथा उनकी 'नाथ सम्प्रदाय' विषयक कृति उनके वैचारिक चिंतन की आधारशिला है, जिसे एक महत्वपूर्ण और प्रमाणिक शोध ग्रंथ के रूप में स्वीकार किया गया है। द्विवेदी जी के अनुसार कबीर मूलत: भक्त थे और उनका साहित्य भक्ति परंपरा से संबंधित है।

परंपरा और आधुनिकता पर विचार रखते हुए उन्होंने कहा कि मनुष्य के विकास में परंपरा उसका पीछे वाला और आधुनिकता आगे वाला पांव है; दोनों के संतुलन से ही प्रगति संभव है। उन्होंने द्विवेदी जी के शोध-दृष्टिकोण को रेखांकित करते हुए बताया कि उन्होंने कबीर और नाथ संप्रदाय के संबंधों का गहन विश्लेषण किया तथा कबीर को भक्ति परंपरा के साथ-साथ एक स्वतंत्र और सशक्त साहित्यकार के रूप में भी स्थापित किया। उन्होंने यह भी

स्पष्ट किया कि द्विवेदी जी परंपरा को स्थिर नहीं, बल्कि गतिशील मानते थे और उसे सामाजिक -सांस्कृतिक तथा ऐतिहासिक संदर्भों के साथ समझने पर बल देते थे।

भाषणमाला की अध्यक्षता करते हुए प्रो. पूरनचंद टंडन जी ने "परंपरा का निर्वाह ही उसका उद्घाटन है" कथन से अपने विचार प्रस्तुत किए। उन्होंने आचार्य रामचंद्र शुक्ल, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी और डॉ. नगेंद्र को भारतीय ज्ञान परंपरा के महत्वपूर्ण स्तंभ बताया। मैथिली -शरण गुप्त की 'भारत-भारती' के माध्यम से उन्होंने भारत के अतीत, वर्तमान और भविष्य की चिंताओं को रेखांकित किया तथा मातृभाषा को भावनाओं की सच्ची अभिव्यक्ति माना।

उन्होंने ललित निबंध की परंपरा में 'लालित्य' को उसकी आत्मा बताते हुए कहा कि सांस्कृतिक आख्यानों के माध्यम से परंपरा जीवंत रहती है। आधुनिक तकनीक के प्रभाव के बीच परंपरा के मूल तत्वों को सुरक्षित रखते हुए नए माध्यमों से प्रसारित करने की आवश्यकता पर उन्होंने बल दिया। उन्होंने मैथिलीशरण गुप्त और रामधारी सिंह दिनकर के माध्यम से राष्ट्रभाव की अभिव्यक्ति को रेखांकित किया तथा

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी को परंपरा की आधुनिक व्याख्या करने का करने वाला चिंतक बताया।

प्रो. टंडन सर ने भाषा और साहित्य को निरंतर विकसित करने वाली प्रक्रिया मानते हुए भारतीय भाषाओं के संरक्षण और संवर्धन की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने 'शब्द सागर' जैसे कोश-निर्माण कार्यों और भारतीय ज्ञान परंपरा की बहुलतावादी, समृद्ध और प्रवाहमान प्रकृति का उल्लेख किया। अंत में उन्होंने परंपरा और आधुनिकता के संतुलन को आवश्यक बताते हुए नई शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में भारतीय ज्ञान-परंपरा के पुनर्स्थापन को एक महत्वपूर्ण चुनौती बताया।

इसके उपरांत सत्र को संवादात्मक स्वरूप प्रदान करते हुए छात्राओं एवं प्राध्यापकों ने मुख्य वक्ता से विषय से संबंधित जिज्ञासापूर्ण प्रश्न पूछे। इस प्रश्नोत्तर सत्र ने कार्यक्रम को और अधिक जीवंत एवं सार्थक बना दिया, जहाँ विचारों का गहन आदान-प्रदान हुआ और विभिन्न दृष्टिकोणों से विषय की नई परतें उद्घाटित हुईं।

तत्पश्चात विभागाध्यक्ष डॉ. कुसुम लता

ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत करते हुए सभी अतिथियों, प्राचार्या, वक्ताओं, प्राध्यापकों एवं छात्राओं के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया। उन्होंने आयोजन की सफलता में सभी के सहयोग और सहभागिता को विशेष रूप से सराहते हुए कार्यक्रम के समापन की घोषणा की।

संयोजक
हिंदी साहित्य परिषद
2025-26.

हिन्दी साहित्य परिषद

वार्षिक रिपोर्ट

2025-2026

वर्ष 2025-26 में दौलतराम महाविद्यालय की 'हिंदी साहित्य परिषद्' द्वारा अनेक साहित्यिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। जिसमें हिंदी विभाग की प्राध्यापिकाओं एवं छात्राओं की सक्रिय सहभागिता रही। जिसके अंतर्गत सर्वप्रथम हिंदी साहित्य परिषद् के कार्यकारिणी सदस्यों का चुनाव ऑनलाइन माध्यम से दिनांक 25 अगस्त 2025, को विभागाध्यक्ष डॉ. कुसुम लता एवं हिंदी साहित्य परिषद् के संयोजकों डॉ. शीतल कुमारी एवं डॉ. संतोष सैन के संरक्षण में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। हिंदी साहित्य परिषद् के कार्यकारिणी सदस्यों के नाम इस प्रकार हैं:-

अध्यक्ष - वैष्णवी पटेल (तृतीय वर्ष)
उपाध्यक्ष - जूही वाल्मीकि (तृतीय वर्ष)
सचिव - महक (द्वितीय वर्ष)
सहसचिव - विधु (द्वितीय वर्ष)
कोषाध्यक्ष - ब्यूटी कुमारी (प्रथम वर्ष)
सह-कोषाध्यक्ष - सीता (प्रथम वर्ष)

दिनांक 10 सितंबर, 2025 को चतुर्थ वर्ष की छात्राओं के लिए 'वर्तमान शोध परिदृश्य और शोध कौशल की संभावनाएं' पर व्याख्यान एवं परिचर्चा सत्र का आयोजन किया गया। व्याख्यान एवं परिचर्चा अध्यक्ष और विशिष्ट वक्ता के रूप में हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय के वरिष्ठ प्रो. अनिल राय, विभाग प्रभारी के रूप में डॉ. कुसुम लता एवं विभाग के सभी प्राध्यापक-प्राध्यापिकाएं सम्मिलित हुई। विशिष्ट वक्ता के रूप में हिंदी विभाग में प्रो. अनिल राय जी के द्वारा चतुर्थ वर्ष की छात्राओं को मार्गदर्शन करते हुए उनको रिसर्च और शोध की प्रक्रिया और उसके विविध सोपानों पर विस्तारपूर्वक चर्चा करते हुए छात्राओं का मार्गदर्शन किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ० शीतल कुमारी द्वारा किया गया। परिचर्चा के अंत में चतुर्थ वर्ष की छात्राओं द्वारा प्रो. अनिल राय जी से

प्रश्न पूछे गए। इस प्रकार के व्याख्यान एवं परिचर्चा सत्र का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया।

दिनांक 25 सितंबर, 2026 को आदरणीय प्राचार्य प्रो. सविता राय के गरिमामय मार्गदर्शन में हिंदी विभाग, दौलतराम महाविद्यालय में हिंदी पखवाड़ा के अवसर पर हिंदी विभाग और राजभाषा प्रकोष्ठ के संयुक्त तत्वावधान में अनेक साहित्यिक और सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। राजभाषा प्रकोष्ठ की संयोजक प्रो. प्रीति मल्होत्रा, सह संयोजक डॉ. शीतल कुमारी, हिंदी विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. कुसुम लता, हिंदी साहित्य परिषद् की संयोजक डॉ. शीतल कुमारी एवं डॉ. संतोष सैन के मार्गदर्शन में सभी प्रतियोगिताएं सफलतापूर्वक संपन्न करायी गयी। प्रतियोगिताओं में पुरस्कार प्राप्त करने वाली छात्राओं की सूची इस प्रकार है:-

स्वररचित कविता पाठ प्रतियोगिता

प्रथम पुरस्कार - रिद्धि गिरी (हिंदी विशेष, चतुर्थ वर्ष)
द्वितीय पुरस्कार - अमन खान (B.Sc(H) Botony) (द्वितीय वर्ष)
तृतीय पुरस्कार - मनीषा (तृतीय वर्ष)

कहानी वाचन प्रतियोगिता

प्रथम पुरस्कार - रुकमणि (बी.ए. प्रोग्राम, प्रथम वर्ष)
द्वितीय पुरस्कार - रिद्धि गिरी (हिंदी विशेष, चतुर्थ वर्ष)
तृतीय पुरस्कार - सुनीता चौधरी (बी.ए. प्रोगाम, चतुर्थ वर्ष)

साहित्यिक अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता

प्रथम पुरस्कार :- रश्मि शुक्ला
आँचल
वैष्णवी पटेल
(हिंदी विशेष, तृतीय वर्ष)

द्वितीय पुरस्कार :- मनीषा कुमारी
खुशबु कुमारी
(हिंदी विशेष, तृतीय वर्ष)

हिंदी भाषा प्रश्नोतरी प्रतियोगिता

प्रथम पुरस्कार - खुशी, आरती बिष्ट, निशा शर्मा, वर्षा, वैष्णवी पटेल
(हिंदी विशेष, तृतीय वर्ष)

द्वितीय पुरस्कार - याशिका, रश्मि शुक्ला, ज्योति, खुशबु
(हिंदी विशेष, तृतीय वर्ष)

आशु भाषण प्रतियोगिता

प्रथम पुरस्कार - अंशिका (बी.ए. प्रोगाम, तृतीय वर्ष)
द्वितीय पुरस्कार - वर्षा (हिंदी विशेष, तृतीय वर्ष)

दिनांक 01 अक्टूबर 2025 को हिंदी विभाग की नवागंतुक छात्राओं के लिए स्वागत समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें प्रथम वर्ष की छात्राओं का विभागाध्यक्ष डॉ. कुसुम लता एवं हिंदी साहित्य परिषद् के संयोजक डॉ. शीतल कुमारी, डॉ. संतोष सैन एवं विभाग के सभी प्राध्यापक एवं प्राध्यापिकाओं से परिचय कराया गया। इस

अवसर पर नवागत छात्राओं के लिए 'संस्कार और सृजन (नव उल्लास, नई उमंगें)' थीम पर आधारित प्रतिभा प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें प्रथम वर्ष की सभी छात्राओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और अपनी प्रतिभा का कुशलता से प्रदर्शन किया। आयोजित प्रतियोगिताओं में उनकी प्रतिभा के आधार पर उन्हें निम्न पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। पुरस्कृत छात्राओं की सूची इस प्रकार है –

हिंदी श्री – अंजली
हिंदी शोभा – रोजी खातून
हिंदी आभा – समृद्धि चतुर्वेदी

13 नवंबर, 2025 को "भारतीय ज्ञान परंपरा : साहित्य, शोध और संभावनाएं" विषय पर आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी स्मारक भाषणमाला की ५५वीं शृंखला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का आरंभ, सभी अतिथियों, प्राचार्या प्रो. सविता रॉय, हिंदी विभाग के प्राध्यापक और प्राध्यापिकाओं एवं सेवानिवृत्त प्राध्यापिकाओं द्वारा दीप प्रज्ज्वलन और सरस्वती वंदना के साथ भाषणमाला कर शुभारम्भ किया गया। डॉ. संतोष सैन जी के द्वारा आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी की उदात्ता, उनके विचारों, साहित्यिक ज्ञान एवं लेखन शैली से सभी का परिचय कराते हुए आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी के विविध साहित्यिक ग्रंथों के उद्धरण देकर हिंदी साहित्य में उनके महत्व एवं योगदान पर प्रकाश डाला। महाविद्यालय की प्राचार्या प्रो. सविता रॉय के सान्निध्य में भाषणमाला के अध्यक्ष के रूप में हिंदी विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय के वरिष्ठ प्रो. पूरनचंद टंडन, मुख्य वक्ता के रूप में अदिति महाविद्यालय की प्रो. आशा सम्मिलित हुई। दौलतराम महाविद्यालय के हिंदी विभाग के लिए यह बहुत गर्व का विषय रहा कि आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी की पौत्री अपर्णा द्विवेदी जी ने मुख्य

अतिथि के रूप में कार्यक्रम की शोभा को बढ़ाया। साथ ही आचारी हजारीप्रसाद द्विवेदी के पोते और उनकी धर्मपत्नी के रूप में डॉ. नगेंद्र की पौत्री भी कार्यक्रम में उपस्थित रही। हिंदी के महान साहित्यकार आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की पौत्री एवं पोते तथा प्रख्यात आलोचक डॉ. नगेन्द्र की पौत्री की गरिमामयी उपस्थिति ने भाषणमाला की ४५वीं श्रृंखला के इस कार्यक्रम की शोभा में अनेक गुना वृद्धि कर दी। हिंदी के महान साहित्यकारों के परिजनों का सान्निध्य केवल हिंदी विभाग और महाविद्यालय के लिए गौरव का विषय ही नहीं, बल्कि साहित्यिक परंपरा और सांस्कृतिक विरासत से जुड़ने का एक प्रेरणास्त्रोत भी है। इन सभी की उपस्थिति के माध्यम से हमारी छात्राएं और हिंदी विभाग के समस्त प्राध्यापकों को उन महान विभूतियों की स्मृतियों और उनके अमूल्य योगदान को और अधिक निकटता से अनुभव कर पाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

दिनांक 23 जनवरी 2026 को दौलतराम महाविद्यालय के प्रांगण में हिंदी, संस्कृत और संगीत विभाग द्वारा बसंतोत्सव एवं सरस्वती पूजन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का आरंभ मंगलाचरण से हुआ। उप-प्राचार्या प्रो. प्रीति मल्होत्रा, IQAC संयोजक प्रो. पद्मश्री मुद्गल मैम ने कार्यक्रम में उपस्थित होकर बसंत के महत्व को बताते हुए सभी छात्राओं पर मां सरस्वती का आशीर्वाद बना रहे ऐसी मंगलकामना की। तीनों विभागों द्वारा बसंत के आगमन के अवसर पर रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किए। मां सरस्वती की आरती से कार्यक्रम का समापन हुआ। अंत में प्रसाद वितरण किया गया।

दिनांक ५ फरवरी, 2026 को हिंदी साहित्य परिषद् हिंदी विभाग द्वारा 'सृजन' वार्षिक महोत्सव के अंतर्गत विभिन्न साहित्यिक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इन

प्रतियोगिताओं में हिंदी विभाग की छात्राओं ने उत्साह-पूर्वक भाग लिया और समसामयिक विषय पर आधारित प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार स्वरूप प्रमाणपत्र और पुरस्कार राशि भी प्रदान की गई।

वार्षिक महोत्सव कार्यक्रम का उद्घाटन "भारतीय संस्कृति और आधुनिक नारी" विषय पर व्याख्यान के साथ किया गया जिसमें विषय वक्ता के रूप में हिंदी विभाग मानविकी विद्यापीठ इग्नू, नई दिल्ली की संयोजक डॉ. राजवंती ने अपने महत्वपूर्ण विचारों से विषय की गंभीरता को सरलता प्रदान कर छात्राओं का मार्गदर्शन किया और उनका ज्ञानवर्द्धन किया।

वार्षिक महोत्सव में आयोजित प्रतियोगिताओं का विवरण इस प्रकार है-

कहानी प्रतियोगिता

प्रथम पुरस्कार - याशिका (तृतीय वर्ष)
द्वितीय पुरस्कार - आरती बिष्ट (तृतीय वर्ष)
तृतीय पुरस्कार - नित्या (प्रथम वर्ष)

निबंध प्रतियोगिता (विषय - डिजिटल युग में हिंदी भाषा की चुनौतियाँ और संभावनाएँ)

प्रथम पुरस्कार - आरती बिष्ट (तृतीय वर्ष)
द्वितीय पुरस्कार - वर्षा रानी (प्रथम वर्ष)

कार्ड मेकिंग प्रतियोगिता

प्रथम पुरस्कार - याशिका (तृतीय वर्ष)
द्वितीय पुरस्कार - खुशी (तृतीय वर्ष)
तृतीय पुरस्कार - सलोनी मौर्या (द्वितीय वर्ष)

लोकगीत प्रतियोगिता

प्रथम पुरस्कार - सलोनी मौर्या (द्वितीय वर्ष)
द्वितीय पुरस्कार - समृद्धि चतुर्वेदी (प्रथम वर्ष)
तृतीय पुरस्कार - प्रिया कुमारी (प्रथम वर्ष)

लोकनृत्य प्रतियोगिता

प्रथम पुरस्कार - कनिष्का शर्मा (चतुर्थ वर्ष)
द्वितीय पुरस्कार - याशिका (तृतीय वर्ष)
तृतीय पुरस्कार - रश्मि शुक्ला (तृतीय वर्ष)
सांत्वना पुरस्कार - पूजा मौर्या (द्वितीय वर्ष)
मिलन (तृतीय वर्ष)

रंगोली प्रतियोगिता

प्रथम पुरस्कार - रिया, रिया, हर्षिता (चतुर्थ वर्ष)
काजल (द्वितीय वर्ष)
द्वितीय पुरस्कार - ज्योति, खुशबू, रीतिका, मोनिका राव (द्वितीय वर्ष)
तृतीय पुरस्कार - नेहा राठौर, नाजिया, राजकुमारी, रागिनी यादव (प्रथम वर्ष)

एकांकी नाटक प्रतियोगिता

प्रथम पुरस्कार - चतुर्थ वर्ष
निकिता, रिद्धि गिरि, साइना राई, अपेक्षा, शिवानी, शाहिदा, मंतशा, अंशिका

द्वितीय पुरस्कार - तृतीय वर्ष
खुशी, आरती बिष्ट, अर्पिता कुमारी, अंजली, ललिता जोशी

तृतीय पुरस्कार - प्रथम वर्ष

सौम्या सिंह, प्रिया वर्मा, मीनाक्षी सिंह, स्नेहा राजोतिया, शीतल, नंदिनी दास, रोजी खातून, रागिनी, रॉलिक सिंह, उर्मिला साहनी, प्रिया कुमारी, मोनिका राव, तपस्या गुप्ता, निशा कुमारी, रश्मि सिंह, शिवानी यादव, मोनिका, अंजनी अग्रवाल, साक्षी

दिनांक 24 फरवरी 2026 को हिंदी विभाग द्वारा "जागरूक बनो : सुरक्षित प्रवासन" विषय पर एक कार्यशाला आयोजित की गई। इस अवसर पर विभाग की पूर्व छात्रा रागिनी शंकर सिंह ने छात्राओं को सुरक्षित विदेश प्रवासन, आवश्यक दस्तावेज़ों, वीज़ा प्रक्रिया एवं सावधानियों के बारे में मार्गदर्शन दिया। उन्होंने छात्राओं को सही जानकारी के महत्व तथा फर्जी एजेंटों से सतर्क रहने के लिए प्रेरित किया। कार्यशाला के अंत में प्रश्नोत्तर सत्र भी आयोजित किया गया। यह कार्यशाला छात्राओं के लिए अत्यंत उपयोगी एवं जागरूकता बढ़ाने वाली रही।

दिनांक 25 अप्रैल, 2026 वर्ष की छात्राओं के लिए विदाई समारोह का आयोजन किया गया। छात्राओं ने नृत्य, संगीत आदि रंगारंग कार्यक्रमों की प्रस्तुति अत्यंत उत्साह के साथ दी। विभागाध्यक्ष डॉ. कुसुम लता तथा विभाग की सभी प्राध्यापिकाओं ने छात्राओं को शुभाशीष देकर उनके उज्जवल भविष्य के लिए शुभकामनाएं दी।

परिषद् द्वारा आयोजित सभी कार्यक्रमों का आयोजन छात्र कार्यकारिणी सदस्यों के सक्रिय सहयोग से संपन्न हुआ। अंत : कार्यकारिणी सदस्यों का हार्दिक धन्यवाद। विभाग की सभी प्राध्यापिकाएं एवं प्राध्यापकों का आत्मिक आभार, आप सभी के सहयोग से हिंदी साहित्य परिषद

के कार्यक्रम सफलतापूर्वक आयोजित किए जाते हैं। परिषद् की वर्षभर की साहित्यिक गतिविधियों के सफल आयोजन के लिए महाविद्यालय की प्राचार्या जी का हृदय से आभार व्यक्त करते हैं जिन्होंने वर्षभर हमारा मार्गदर्शन किया।

संयोजक
हिंदी साहित्य परिषद्
2025-26

विदाई समारोह

25 अप्रैल माह में तृतीय वर्ष की छात्राओं के लिए विदाई समारोह का आयोजन किया गया।

परिषद की वर्षभर की गतिविधियों के लिए महाविद्यालय की प्राचार्या जी का आभार जिन्होंने सदैव हमारा मार्गदर्शन किया। हिंदी की सभी प्राध्यापिकाओं एवं प्राध्यापकों तथा छात्राओं का धन्यवाद जिनकी उपस्थिति ने सदैव हमारा संबल बढ़ाया।

विदाई समारोह

25 अप्रैल माह में तृतीय वर्ष की छात्राओं के लिए विदाई समारोह का आयोजन किया गया।

परिषद की वर्षभर की गतिविधियों के लिए महाविद्यालय की प्राचार्या जी का आभार जिन्होंने सदैव हमारा मार्गदर्शन किया। हिंदी की सभी प्राध्यापिकाओं एवं प्राध्यापकों तथा छात्राओं का धन्यवाद जिनकी उपस्थिति ने सदैव हमारा संबल बढ़ाया।

दौलत राम महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय
हिंदी साहित्य परिषद्, हिंदी विभाग
एवं
राजभाषा प्रकोष्ठ के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित
व्याख्यान एवं परिचर्चा सत्र
विषय :- राजभाषा हिंदी : क्रियान्वयन की चुनौतियां
और संभावनाएं

DAULAT RAM COLLEGE
GPS Map Camera
Delhi, Delhi, India
M6q4+359, Sant Kirpal Singh Marg, Daulat Ram College, Block C, Maurice Nagar, Roop Nagar, Delhi, Delhi 110007, India
Lat 28.687781° Long 77.205015°
Friday, 23/01/2026 12:19 PM GMT +05:30
Google

तुम भूल गये पुरुषत्व-मोह में,
कुछ सत्ता है नारी की।
समरसत्ता है संबंध बनी,
अधिकार और अधिकारी की।